दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं

अंगोला, बोट्सवाना, लिसोठो, मलावी, मोरेशस, मौज़ाम्बीक, नामिबिया, स्वाज़ीलैंड, ज़ाम्बिया, ज़िम्बाब्वे

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Dakshini Africa ki Lok Kathayen (Folktales of Southern Africa)
Cover Page picture: A Water Fall in Lesotho, Southern Africa
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Southern Africa

11 countries of Southern Africa
(1) Angola, (2) Botswana, (3) Lesotho, (4) Malawi, (5) Mozambique, (6) Namibia, (7) Reunion, (8) **South Africa**, (9) Swaziland, (10) Zambia, and (11) Zimbabwe
South Africa's folktales are given separately.

विंडसर, कैनेडा

मार्च **2018**

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं 5
1 सूरज और चॉद की बेटी 8
2 ऐमपिपिडी और मोटलोपी पेड़ 27
3 माडीपैटसैने 35
4 मॉ जो धूल में बदल गयी 46
5 बाज़ और बच्चा 61
6 एक सुन्दर नौजवान साकूनाका 67
7 जादुई खीरे 72
8 बिल्ली घर में कैसे आयी 85

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे पहले सबसे बड़ा और सबसे बाद में सबसे छोटा। इस तरह अफ्रीका साइज़ और जनसंख्या दोनों में एशिया से दूसरे नम्बर पर आता है। अफ्रीका की जनसंख्या 1 बिलियन से ज़्यादा है और उनमें से भी इसमें 50 प्रतिशत जनता 20 साल की उम्र से कम की है। इस तरह से यह दुनियॉ का सबसे ज़्यादा जवानों का महाद्वीप है।

इस महाद्वीप में संसार के सातों महाद्वीपों में सबसे ज्यादा देश हैं – 54 देश। मिश्र, इथियोपिया, यूगान्डा, तनज़निया, केन्या, दक्षिण अफ्रीका, ज़िम्बाब्वे और नाइजीरिया यहॉ के जाने माने देशों में आते है। इस महाद्वीप में संसार का सबसे बड़ा रेगिस्तान भी है – सहारा रेगिस्तान। इसने अफ्रीका का 25 प्रतिशत हिस्सा घेरा हुआ है। इसकी मुख्य नदियॉ हैं नील नदी, ज़ाम्बेज़ी नदी, कौंगो नदी। इसकी मुख्य झील है विक्टोरिया झील जो तीन देशों में बॅटी है – केन्या, यूगान्डा और तनज़ानिया। नील नदी इस विक्टोरिया झील से यूगान्डा के उत्तर की तरफ से निकलती है और उत्तर की तरफ ही चली जाती है। इसका मुख्य पहाड़ है किलिमन्जारो जो तनज़ानिया में है। इसमें तीन ज्वालामुखी चोटियॉ हैं।

इसके इथियोपिया देश को "तेरह महीने की धूप का देश" पुकारा जाता है। इसके लिसोठो देश को "आकाश में राज्य" नाम से पुकारा जाता है।[1] इसके मिश्र देश के पिरामिडों को कौन नहीं जानता। वे संसार के आठ आश्चर्यों में से एक हैं।

बहुत बड़ा होने की वजह से इसमें पूर्व से ले कर पश्चिम तक और उत्तर से ले कर दक्षिण तक बहुत भिन्नता है – खाने में, पीने में, पहनने में, रहने सहने में, लोगों की शक्लों में, भाषा में। पर एक बात सबमें एक सी है कि यहॉ के बहुत सारे देश फुटबाल खेलते हैं। यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब आधे आधे हैं।

इस महाद्वीप का अपना लिखा साहित्य और इसके बारे में लिखा साहित्य और दूसरे महाद्वीपों की तुलना में बहुत कम मिलता है इसी वजह से हमने इस महाद्वीप की लोक कथाऐं हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने का विचार किया है। इस महाद्वीप से हमने 400 से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। अफ्रीका के 54 देशों में से केवल कुछ ही देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, घाना, मिश्र, ज़ंजीबार, पश्चिमी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका, इथियोपिया आदि। इसलिये इन देशों की लोक कथाए इन देशों के नाम से ही दी गयीं हैं। दूसरे, अफ्रीका में नाइजीरिया और घाना देशों की लोक कथाओं में अनन्सी मकड़े, खरगोश और कछुए का अपना एक अलग ही स्थान है इसलिये इन तीनों की लोक कथाऐं भी अलग से ही दी गयीं है।

दक्षिणी अफ्रीका अफ्रीका महाद्वीप के सुदूर दक्षिण में स्थित हिस्से का नाम है। इसके उसी तरह से तीन तरफ समुद्र है जैसे भारत के। पुराने समय में यानी जब तक लाल सागर को भूमध्य सागर को मिलाने वाली स्वेज़ नहर नहीं बनी थी तब तक पानी के जहाज पूर्व से यूरोप की ओर और यूरोप से पूर्व की ओर इसी दक्षिणी अफ्रीका के बन्दरगाहों से हो कर जाया करते थे।

[1] "Land of Thirteen Months of Sunshine" and "Kingdom in the Sky"

दक्षिणी अफ्रीका में **11** देश आते हैं – अंगोला, बोट्सवाना, लिसोठो, मलावी, मोरेशस, मोज़ाम्बीक, नामीबिया, दक्षिण अफ्रीका, स्वाज़ीलैंड, ज़ाम्बिया, और ज़िम्बाव्वे। कुछ समय पहले नेलसन मन्डेला ने एक पुस्तक सम्पादित[2] की थी जिसमें अफ्रीका के कई देशों से ली गयी **32** लोक कथाऐं प्रकाशित की गयी थीं।

उन लोक कथाओं में से हम दक्षिण अफ्रीका देश को छोड़ कर दक्षिणी अफ्रीका के देशों की कथाऐं चुन कर अपने हिन्दी भाषा भाषियों के लिये हिन्दी भाषा में "दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं" नाम की इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। इन कथाओं के अलावा हमने इस पुस्तक में दक्षिणी अफ्रीका के देशों की कुछ और लोक कथाऐं भी शामिल की हैं जो नेलसन मन्डेला की पुस्तक के अलावा दूसरी जगहों से ली गयी हैं। कुल मिला कर हम इसमें **8** लोक कथाऐं दे रहे हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के देशों में बहुत पहले से यूरोप के बहुत सारे देशों के लोग आ कर बस गये थे। इन कथाओं में उनकी अपने देशों से लायी गयी कुछ कथाओं का असर भी शामिल है।

तो लो यह है तुम्हारे हाथों में "दक्षिणी अफ्रीका की लोक कथाऐं"।

[2] Mandela, Nelson (ed). "Favorite African Stories". 32 stories.

1 सूरज और चॉद की बेटी[3]

अफ्रीका की यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के अंगोला देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि अफ्रीका के अंगोला देश में एक बहुत ही सुन्दर और बहादुर नौजवान रहता था जिसका नाम था किया–तुम्बा ऐनडाला[4]। वह एक सरदार का बेटा था और उस सरदार का नाम था किमानौऐज़े[5]।

गॉव की सारी लड़कियॉ उस नौजवान से शादी करना चाहती थीं। उसका पिता किमानौऐज़े भी चाहता था कि उसके बेटे की अब शादी हो जानी चाहिये सो वह बार बार किया से इस बारे में बात करता।

"मेरे बेटे, अब समय आ गया है जब तुमको शादी कर लेनी चाहिये सो अब तुम शादी कर लो और अपना परिवार बनाओ। गॉव में बहुत सारी लड़कियॉ हैं। तुम उनको देखो और जो तुमको सबसे अच्छी लगे उससे शादी कर लो।"

पर हर बार किया कोई न कोई बहाना बना कर पिता की बात को या तो टाल जाता या फिर अनसुना कर देता।

---

[3] The Daughter of the Sun and the Moon – a folktale from Mbundu Tribe, Angola, Southern Africa. Adapted from the book "African Folktales" by A Ceni.

[4] Kia-Tumba Ndala – name of the young man

[5] Kimanaueze – name of the Chief.

आखिर एक दिन अपने पिता के लगातार कहने पर वह बोला — "पिता जी, मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

किमानौऐज़े को लगा कि शायद उसकी समझ में नहीं आया कि उसके बेटे ने क्या कहा सो उसने उससे फिर कहा — "तुमने क्या कहा बेटा? तुम किससे शादी करना चाहते हो?"

किया कुछ नाराजी से बोला — "मैंने कहा न पिता जी कि मुझे इस धरती की किसी लड़की से शादी नहीं करनी।"

यह सुन कर तो उसका पिता और भी आश्चर्य में पड़ गया और उससे पूछा — "तब तुम किससे शादी करना चाहते हो बेटा?"

"मुझे अगर शादी करनी ही पड़ी तो मैं भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से शादी करूॅगा।"

पिता बाला — "मेरे बेटे ज़रा ठीक से सोचो। हम लोग सूरज और चॉद की बेटी का हाथ मॉगने के लिये स्वर्ग कैसे जा सकते हैं?"

"देखेंगे पिता जी। पर यह बात पक्की है कि मैं भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी के अलावा किसी और से शादी नहीं करूॅगा।"

सारे गॉव ने जब यह सुना तो उन सबको यही लगा कि किसी ने उसके ऊपर जादू कर दिया है और इस जादू की वजह से उसकी अक्ल काम नहीं कर रही। उसका दिमाग काम नहीं कर रहा।

यहॉ तक कि उसके पिता ने भी फिर उससे शादी के बारे में बात करना बन्द कर दिया। पर किया–तुम्बा ने यह पक्का इरादा कर रखा था कि वह अगर शादी करेगा तो केवल भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से ही करेगा और किसी से भी नहीं।

सो उसने भग्वान सूरज को एक चिट्ठी लिखी जिसमें उसने उनकी बेटी का हाथ मॉगा।

हाथ में वह चिट्ठी लिये हुए वह एक हिरन[6] के पास गया ताकि वह उसकी चिट्ठी सूरज के पास स्वर्ग ले जा सके पर हिरन ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा — "मुझे अफसोस है किया कि मैं इतनी दूर नहीं जा सकता।"

किया फिर एक हिरनी[7] के पास गया पर उसने भी उसको मना कर दिया — "अफसोस किया मैं इतनी दूर ऊपर स्वर्ग में नहीं जा सकती।"

उसके बाद किया–तुम्बा एक बाज़[8] के पास गया तो अपने पर चौड़े चौड़े फैला कर उसने कहा — "मैं उतनी दूर तक उड़ तो सकता हूँ पर मैं भगवान सूरज तक नहीं जा सकता।"

[6] Translated for the word "Deer"

[7] Translated for the word "Antelope". See its picture above.

[8] Translated for the word "Hawk"

अन्त में वह गिद्ध[9] के पास पहुँचा पर गिद्ध ने भी ऐसा ही कुछ कहा — "मैं आधी दूर तक तो जा सकता हूँ पर पूरी तरह से वहाँ जाना यानी स्वर्ग में अन्दर जाना, नहीं नहीं मैं वहाँ तक नहीं जा सकता। यह मुश्किल काम है किया। अफसोस यह मैं नहीं कर सकता।"

इतने सारे जानवरों से ना सुनने के बाद किया काफी नाउम्मीद हो गया। उसको लगा कि यह शादी तो सचमुच में मुमकिन नहीं लगती सो उसने वह चिट्ठी एक बक्से में बन्द कर दी और उसके बारे न सोचने की कोशिश की।

उधर भगवान सूरज और रानी चाँद की दासियाँ धरती पर किया–तुम्बा के गाँव के पास वाले कुँए से पानी भरने के लिये आया करती थीं।

वहीं उस कुँए में एक मेंढक रहता था। उसने उनको वहाँ से पानी ले जाते हुए कई बार देखा था। उस मेंढक को किया की इच्छा का भी पता था।

इसके अलावा वह किया को यह भी दिखाना चाहता था कि वह उसके लिये कितने काम का जानवर था सो उसके दिमाग में एक तरकीब आयी।

[9] Translated for the word "Vulture.

एक दिन वह किया के पास गया और बोला — "मुझे मालूम है कि तुमने अपनी शादी के लिये एक चिट्ठी लिखी है।"

किया बोला — "हॉ लिखी तो है। पर वह तो ऐसी ही है जैसे मैंने उसको लिखा ही न हो क्योंकि मुझे कोई ऐसा मिला ही नहीं जो उसको ऊपर स्वर्ग में ले जा सके।"

मेंढक बोला — "तुम उस चिट्ठी को मुझे दे दो मैं देखता हूॅ।"

किया कुछ शक के साथ बोला — "बेवकूफ मत बनो। क्योंकि जब उसको बड़े बड़े परों वाली चिड़ियें नहीं ले जा सकीं तो तुम कैसे ले कर जाओगे?"

मेंढक बोला — "मेरा विश्वास करो मुझे मालूम है कि मैं क्या कह रहा हूॅ। तुम देखना मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूॅ।"

किया–तुम्बा ने कुछ देर सोचा पर फिर यह सोच कर कि इसमें हर्ज ही क्या है उसका कोई नुकसान तो है नहीं उसने वह चिट्ठी ला कर मेंढक को दे दी और कहा — "याद रखना कि अगर तुम अपने इस काम में कामयाब नहीं हुए तो तुमको इसके लिये पछताना पड़ेगा।"

मेंढक ने इसकी कुछ ज़्यादा चिन्ता नहीं की और किया से कुछ ज़्यादा हील हुज्जत भी नहीं की। बस वह उस चिट्ठी को ले कर उस कुॅए की तरफ चला गया जहॉ वह रहता था और जहॉ भगवान सूरज और रानी चॉद की दासियॉ पानी भरने आया करती थीं।

उसने वह चिट्ठी अपने मुँह में रखी और उसको मुँह में रख कर वह कुँए के पानी में कूद गया और जा कर वहाँ बिल्कुल चुपचाप बैठ गया।

कुछ देर बाद ही वहाँ भगवान सूरज और रानी चाँद की दासियाँ पानी भरने के लिये आयीं। वहाँ आ कर उन्होंने पानी भरने के लिये अपने अपने घड़े पानी में डुबोये और पानी भर कर उनको ऊपर खींच लिया।

पलक झपकते ही वे पानी ले कर स्वर्ग की तरफ उड़ चलीं। मेंढक भी चुपचाप एक घड़े में छिप कर बैठ गया और उनके पानी के साथ साथ उनके घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया।

जब वे दासियाँ भगवान सूरज के घर पहुँच गयीं तो उन्होंने पानी के घड़े उनकी जगह पर रख दिये और वहाँ से चली गयीं। एक बार जब मेंढक सूरज के घर में पहुँच गया तो वह पानी के घड़े से बाहर कूद गया।

उसके बाद वह कमरे के बीच में रखी एक ऊँची सी मेज पर कूद गया। वहाँ उसने किया की चिट्ठी निकाल कर मेज पर रखी और तुरन्त ही एक अँधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया।

कुछ देर बाद भगवान सूरज वहाँ पानी पीने आये तो उन्होंने मेज पर रखी एक चिट्ठी देखी तो उन्होंने अपनी दासियों को बुलाया और वह चिट्ठी दिखाते हुए उनसे पूछा — "और यह? यह कहाँ से आयी?"

वे डर कर बोलीं — "मालिक हमें नहीं पता कि यह चिट्ठी कहॉ से आयी। हमें सचमुच ही नहीं पता कि यह चिट्ठी कहॉ से आयी।"

भगवान सूरज ने कागज काटने वाला एक चाकू उठाया और उस चिट्ठी को खोल कर पढ़ा — "मैं किया-तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से शादी करना चाहता हूँ।"

भगवान सूरज मुस्कुराये और सोचा — "ज़रा इन धरती के लोगों के स्वर्ग में आने के विचार तो देखो। यह किया तो बहुत ही बहादुर है। पर यह सन्देश लाया कौन होगा।"

भगवान सूरज ने कुछ कहा नहीं और वह चिट्ठी अपनी जेब में रख कर कमरे से बाहर चले गये।

इस बीच उनकी दासियॉ और पानी लाने के लिये कुँए पर वापस जाने वाली थीं कि कमरे में छिपा हुआ मेंढक उनके एक घड़े में फिर से छिप कर बैठ गया और इस तरह फिर धरती पर वापस पहुँच गया। तुरन्त ही वह किया के गॉव की तरफ चल दिया।

वह किया के घर पहुँचा और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया। किया ने दरवाजा खोला तो मेंढक को सामने खड़ा देख कर उसने उससे पूछा — "प्रिय मेंढक, क्या तुम मुझसे यह कहने आये हो कि तुमने मेरी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है या फिर मेरी मार खाने के लिये आये हो?"

मेंढक बोला — "मैंने तुम्हारी चिट्ठी भगवान सूरज तक पहुँचा दी है इसलिये तुम अपने मुझे मारने की तकलीफ को बचा कर रख सकते हो।"

किया ने पूछा — "अगर ऐसा है तो फिर तुम्हारे पास उसका कोई जवाब क्यों नहीं है?"

मेंढक बोला — "यह तो मुझे नहीं पता पर मुझे यह पता है कि तुम्हारी चिट्ठी सही आदमी के हाथ में पहुँच गयी है और उसने उसको पढ़ भी लिया है।

अगर तुम चाहते हो कि तुमको उसका जवाब मिले तो तुम एक और चिट्ठी लिख सकते हो जिसमें तुम भगवान सूरज को जवाब देने के लिये कहो। तुम्हारे लिये मैं उसको भी स्वर्ग ले जाने के लिये तैयार हूँ।"

किया–तुम्बा एक पल के लिये तो हिचकिचाया क्योंकि उसको डर था कि यह मेंढक शायद उसका मजाक बना रहा था पर फिर उसको भगवान सूरज और रानी चाँद की बेटी का ख्याल आया और उसने एक और कोशिश करने का निश्चय कर लिया।

वह बैठा और उसने एक और चिट्ठी लिखी — "मैं किया–तुम्बा ऐनडाला, किमानौऐज़े का बेटा, धरती का एक आदमी, ने आपको पहले भी आपकी बेटी का हाथ माँगने के लिये लिखा था।

चिट्ठी आपको भिजवा दी गयी थी पर मुझे अभी तक उसका कोई जवाब नहीं मिला है। इसलिये मैं यह जानने के लिये कि मेरा

यह प्रस्ताव आपको मंजूर है कि नहीं मैं एक और चिट्ठी भेज रहा हूँ। आशा है कि आप बताने की कृपा करेंगे।"

चिट्ठी लिख कर उसने अपने दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द करके मेंढक को दे दिया। मेंढक फिर से उस कुँए की तरफ चल दिया।

जब मेंढक कुँए पर पहुँचा तो पहले की तरह से उसने किया की चिट्ठी अपने मुँह में रखी और कुँए में कूद गया। वहाँ वह भगवान सूरज की दासियों के आने का इन्तजार करने लगा। कुछ देर बाद जब वे वहाँ पानी भरने आयीं तो वह मेंढक उनके घड़े में बैठ कर फिर से स्वर्ग चला गया।

वहाँ पहुँच कर उसने फिर से मेज पर चिट्ठी रखी और अपने उसी अँधेरे कोने में छिप कर बैठ गया। कुछ देर बाद भगवान सूरज वहाँ आये तो उन्होंने मेज पर फिर एक चिट्ठी रखी देखी। उन्होंने उसको भी उठाया, खोला और पढ़ा।

उस चिट्ठी को देख कर उनका आश्चर्य और बढ़ गया कि वे चिट्ठियाँ धरती पर से कौन ला रहा था सो उन्होंने अपनी दासियों को फिर से बुलाया और उनसे उस चिट्ठी के बारे में पूछा।

उन्होंने कहा — "तुम लोग पानी लाने के लिये हमेशा ही धरती पर जाती रही हो। क्या तुमने किसी को देखा जो ये चिट्ठियाँ वहाँ से यहाँ लाता है?"

यह सुन कर वे दासियॉ तो भगवान सूरज से भी ज़्यादा आश्चर्य में पड़ गयीं। वे एक साथ बोलीं — "नहीं तो। हमें तो इस बात का बिल्कुल ही पता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज ने अपना सिर खुजलाया पर उनकी समझ में यह नहीं आया कि वे चिट्ठियॉ उनके पास तक पहुँच कैसे रही थीं। फिर भी उन्होंने एक कागज लिया और उस पर लिखा —

"तुम मुझे चिट्ठियॉ भेजते रहे हो। कैसे, यह मैं नहीं जानता। उन चिट्ठियों में तुमने मुझे लिखा था कि तुम मेरी बेटी से शादी करना चाहते हो। मैं तुमको उससे शादी करने की इजाज़त दे तो सकता हूँ पर इस शर्त पर कि तुम खुद यहॉ उसके लिये पहली भेंट ले कर आओ ताकि मैं यह देख सकूँ कि तुम किस तरह के आदमी हो।"

फिर उन्होंने उस चिट्ठी पर दस्तखत किये, उसको मोड़ा और बन्द करके उसको वहीं मेज पर रख दिया। मेज पर चिट्ठी रख कर वह वहॉ से चले गये।

जैसे ही भगवान सूरज वहॉ से गये तो मेंढक अपनी जगह से निकला, मेज पर कूदा, चिट्ठी उठा कर अपने मुँह में रखी और एक घड़े में जा कर बैठ गया। जब भगवान सूरज की दासियॉ फिर से पानी भरने के लिये धरती पर गयीं तो वह भी उनके साथ साथ धरती पर चला गया।

जब तक वे दासियॉ वहॉ से स्वर्ग गयीं तब तक वह वहीं छिप कर उनके जाने का इन्तजार करता रहा। जैसे ही वे स्वर्ग चली गयीं वह तुरन्त गॉव में किया के घर भाग गया।

किया ने दरवाजा खोला तो उसने भगवान सूरज की चिट्ठी उसको थमा दी। किया को तो अपनी अपनी ऑखों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह भगवान सूरज के हाथ की लिखी चिट्ठी पढ़ रहा था।

किया खुश हो कर बोला — "इसका मतलब है कि तुम सच बोल रहे थे दोस्त मेंढक। मैं उनके लिये अभी जा कर पहली भेंट तैयार करता हूँ ताकि तुम उसे भगवान सूरज के पास ले जा सको।"

सो उसने एक चमड़े का थैला लिया और उसमें सोने के **40** सिक्के रखे और फिर एक और चिट्ठी लिखी —

"आदरणीय भगवान सूरज जी और रानी चॉद जी। यह आपको मेरी पहली भेंट है। मुझे अफसोस है कि मैं आपके पास खुद नहीं आ सकता। मुझे धरती पर ही ठहरना है क्योंकि मुझे अभी शादी की तैयारियॉ करनी हैं।"

और मेंढक किया की चिट्ठी और पहली भेंट ले कर पहले की तरह से फिर से स्वर्ग पहुँच गया। उसने वह चिट्ठी और पैसों का थैला मेज पर रखा और जैसे गया था वैसे ही वापस आ गया।

इस तरह मेंढक कुछ समय तक किया और भगवान सूरज के बीच सन्देश लाता ले जाता रहा। किया की भेंटें ले जाता रहा।

इस तरह दिन दिन करके एक महीना निकल गया फिर दूसरा महीना भी निकल गया और फिर आया वह दिन जिस दिन किया की शादी भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से होनी थी।

पर किया–तुम्बा अपना मन पक्का नहीं कर पा रहा था क्योंकि उसको बहुत चिन्ता लगी थी। बारह दिन तक वह पलक तक नहीं झपका सका था। आखिर उसने मेंढक को बुलाया और उससे अपनी चिन्ता बतायी।

वह बोला — "दोस्त, मैं खुद तो अपनी पत्नी को लेने के लिये स्वर्ग जा नहीं सकता और न मैं किसी और को जानता हूँ जो उसको यहॉ धरती पर ला सके। मैं क्या करूँ?"

मेंढक तुरन्त ही बोला — "पर मैं तो हूँ। मैं वहॉ जाऊँगा और फिर पता लगाता हूँ कि उसको यहॉ कैसे लाया जा सकता है। तुम चिन्ता न करो।"

किया–तुम्बा को मेंढक के तसल्ली देने पर भी तसल्ली नहीं हुई। वह बोला — "पर तुम तो बहुत छोटे से हो तुम ऐसा कैसे कर सकते हो।"

पर मेंढक ने उसे विश्वास दिलाया — "तुम बिल्कुल चिन्ता न करो। तुम देखना कि मैं उसको यहॉ लाने का कोई न कोई रास्ता उसी तरह से निकाल लूँगा जैसे मैंने तुम्हारी चिट्ठियॉ और भेंटें ले जाने का निकाला था।"

कह कर मेंढक फिर से उसी कुँए पर चला गया।

पहले की तरह से वह वहॉ से वह भगवान सूरज की दासियों की पानी के घड़े में बैठ कर स्वर्ग चला गया और जा कर अपने उसी कोने में बैठ गया जहॉ वह बैठा करता था और भगवान सूरज के सोने का इन्तजार करने लगा।

जब भगवान सूरज के सोने का समय आया तो सब जगह अॅधेरा और शान्त हो गया। मेंढक अपनी जगह से निकला और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी को ढूॅढने चल दिया। उसने इधर देखा उधर देखा तो वह उसको गहरी नींद में सोती हुई मिल गयी।

वह चुपचाप उसके तकिये तक पहुॅच गया। फिर उसने एक सुई धागा निकाला और उसकी पलकें सिलने लगा।

अब उस मेंढक के पास तो वह जादू की सुई धागा थे और दिखायी भी नहीं दे रहे थे। भगवान सूरज की बेटी को उसकी पलकों की सिलाई से कोई तकलीफ भी नहीं हुई। इसके अलावा उनकी सिलाई भी दिखायी नहीं दे रही थी।

जब उसने उसकी पलकें सिल दीं तो अब उनको कोई खोल भी नहीं सकता था।

जब वह लड़की अगले दिन सुबह उठी तो वह अपनी ऑखें ही नहीं खोल पायी। वह बहुत डर गयी और चिल्ला चिल्ला कर रोने लगी और सहायता के लिये पुकारने लगी।

रानी चॉद उसके कमरे में दौड़ी दौड़ी आयी और उससे पूछा — "बेटी क्या बात है क्या हो गया?"

बेटी बोली — "माँ मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी आँखों पर बहुत सारा बोझ रखा है। मैं तो अपनी आँख ही नहीं खोल पा रही हूँ। मुझे डर है कि कहीं मैं अन्धी तो नहीं हो गयी हूँ।"

यह सब सुन कर भगवान सूरज भी वहाँ दौड़े दौड़े आ गये। उन्होंने भी देखा कि उनकी बेटी की आँखें तो बन्द हैं।

वह बोले — "वैसे तो सब कुछ ठीक लग रहा है पर ऐसा लगता है कि किसी अनदेखी ताकत ने इसकी पलकों को नीचे कर रखा है। वह कौन सी ताकत हो सकती है? शायद कोई जादू। क्योंकि कल तक तो यह ठीक थी।"

रानी चाँद ने चाँदी के आँसू बहाते हुए भगवान सूरज से पूछा —"तो अब हम क्या करें?"

भगवान सूरज बोले — "मैं अपने दो दूत अपने अक्लमन्द ओझा ऐनगोम्बो[10] के पास भेजता हूँ। वह हमको बतायेगा कि हमें क्या करना है।" कह कर उन्होंने अपने दो नौकरों को बुलाया और उनको ऐनगोम्बो के पास धरती पर भेजा।

मेंढक वहीं बैठा यह सब सुन रहा था। वह तुरन्त ही एक घड़े में कूद गया और अपने पुराने तरीके से धरती पर पहुँच गया। वह उन दूतों के पहुँचने से पहले ही उस ओझा ऐनगोम्बो के घर पहुँच

[10] Translated for the word "Witch Doctor". Ngombo is his name. Witch doctors are those people who control some kind of witch to tell the future and to do some very difficult job, like Ojhaa in India

गया। दूतों ने रास्ते में शहतूत की झाड़ियॉ देखीं तो वे कुछ देर तक वहीं रुक गये।

उधर वह ओझा अपने किसी काम से घर से बाहर गया हुआ था तो इस मौके का फायदा उठाते हुए मेंढक उसके घर में घुस गया और अन्दर से घर का दरवाजा बन्द कर लिया।

उस ओझा के घर में उसका मुखौटा[11] दीवार पर टॅगा हुआ था जिसको वह अपनी रस्में करते समय पहना करता था सो वह मुखौटा उस मेंढक ने पहन लिया।

कुछ ही देर में भगवान सूरज के दोनों दूत वहॉ आ पहुॅचे। उन्होंने ओझा के घर का दरवाजा खटखटाया तो मुखौटा पहने मेंढक ने अन्दर से पूछा — "कौन है?"

उसकी आवाज सारी झोंपड़ी में गूॅज गयी।

दोनों दूतों ने कहा कि "हम भगवान सूरज के दूत हैं। क्या हम अन्दर आ सकते हैं?"

मेंढक जल्दी से बोला — "नहीं नहीं। तुम अभी अन्दर नहीं आ सकते। यह नामुमकिन है। मैं अभी एक बहुत जरूरी काम में लगा हूॅ। तुम लोग मुझे वहीं बाहर से ही बता दो कि भगवान सूरज को मुझसे क्या काम है।"

[11] Translated fr the word "Mask"

दूतों ने अन्दर आने की जिद नहीं की और उन्होंने उसको वहीं से बताया कि उनके मालिक की बेटी को क्या हुआ है। मेंढक ने शान्ति से उनकी बात सुनी जैसे कि वह उनकी बातें बड़े ध्यान और रुचि से सुन रहा था।

फिर वह कुछ देर चुप रहा जैसे वह कुछ सोच रहा हो और फिर उसी आवाज में बोला — "इसमें कोई शक नहीं है कि लड़की बीमार है और वह इसलिये बीमार है क्योंकि उसका होने वाला पति स्वर्ग जा कर उसको धरती पर नहीं ला सकता।

यह तो एक ऐसा जादू है जिसको सभी जानते हैं। यह तो बहुत पुराना और बहुत ही ताकतवर जादू है। यह कहता है कि "भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी तुम जल्दी से मेरे पास आ जाओ नहीं तो तुम हमेशा के लिये रात के अॅधेरे में डूब जाओगी।

और तुम दोनों जल्दी से यहॉ से भाग जाओ और अपने मालिक से कहो कि वह अपनी बेटी को जल्दी से जल्दी धरती पर भेजने का इन्तजाम करें वरना मौत से बचने का और कोई रास्ता नहीं है।"

यह सुन कर भगवान सूरज के नौकर तो तुरन्त ही भगवान सूरज के पास दौड़ गये और उनको जा कर जो कुछ भी ऐनगोम्बो ने कहा था वैसा का वैसा ही बता दिया।

इधर उन दूतों के जाने के बाद मेंढक किया के घर दौड़ा गया।

"किया–तुम्बा, किया–तुम्बा। अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ तुम्हारी होने वाली दुलहिन बस यहॉ कभी भी आने वाली होगी।"

दुखी किया–तुम्बा घर से बाहर निकल कर आया और मेंढक से पूछा — "यह कैसे मुमकिन है दोस्त? क्या तुम मेरा बेवकूफ बना रहे हो? मेंढक तुम चले जाओ यहॉ से। मुझसे झूठ नहीं बोलो।"

मेंढक बोला — "पर तुम मेरे कहने का विश्वास तो करो। देख लेना शाम होने से पहले पहले तुम्हारी होने वाली दुलहिन यहॉ मौजूद होगी।"

और किया–तुम्बा को जवाब देने का समय दिये बिना ही वह फिर से उसी कुँए पर चला गया जहॉ सूरज भगवान की दासियॉ पानी भरने के लिये आती थीं। और उसके पानी में कूद कर वहॉ उनका इन्तजार करने लगा।

असल में तो मेंढक ने यह पहले ही देख लिया था कि जैसे ही भगवान सूरज के दूतों ने जा कर भगवान सूरज को उसका सन्देश दिया भगवान सूरज ने अपनी बेटी को धरती पर भेजने का इन्तजाम करना शुरू कर दिया था।

उन्होंने तुरन्त ही मकड़े को हुकुम दिया कि वह स्वर्ग से ले कर धरती तक एक बहुत ही लम्बा और मजबूत जाला तैयार करे जिस पर से उनकी अन्धी बेटी उतर कर नीचे धरती पर जा सके। मकड़े ने वैसा ही किया।

और लो। जब शाम होने लगी तो मकड़े का जाला ऊपर से नीचे लटकाया गया और भगवान सूरज की सुन्दर बेटी अपनी दासियों के साथ नीचे धरती पर उतरी।

उसकी दासियों ने उसको कुँए के पास बिठा दिया। उसके बाल सँवारे। उसको तसल्ली दी और उसको वहाँ शान्ति से इन्तजार करने के लिये कहा। उसके बाद वे स्वर्ग वापस चली गयीं।

जैसे ही भगवान सूरज की बेटी वहाँ अकेली रह गयी मेंढक पानी में से बाहर निकला और उसके पास आ कर बोला — "तुम डरो नहीं। मैं तुम्हें तुम्हारे होने वाले दुलहे के पास ले चलूँगा।"

उसने अपना छोटा सा जादू का चाकू निकाला और उससे उसकी आँखों का वह धागा काटना शुरू किया जिससे उसने उसकी पलकों को पहले सिला था और जिसे केवल वही देख सकता था। जब वह दोनों आँखों के धागे काट चुका तो उसको दिखायी देखने लगा।

अब वे दोनों किया–तुम्बा के गाँव की तरफ चले। वे किया–तुम्बा की झोंपड़ी के दरवाजे के सामने आये और मेंढक ने उसका दरवाजा खटखटाया। किया–तुम्बा बाहर आया तो मेंढक बोला — "यह लो अपनी दुलहिन।"

किया–तुम्बा तो उस लड़की सुन्दरता देख कर दंग रह गया। उसके मुँह से तो कोई शब्द ही नहीं निकला। मेंढक को धन्यवाद की जरूरत नहीं थी सो वह सबकी नजर बचा कर वहाँ से गायब हो गया।

इस तरह से धरती के एक बेटे ने भगवान सूरज और रानी चॉद की बेटी से शादी की और फिर वे दोनों ज़िन्दगी भर खुशी खुशी साथ साथ रहे।

2 ऐमपिपिडी और मोटलोपी पेड़[12]

दक्षिणी अफ्रीका के बोट्सवाना देश की एक लोक कथा।

एक बार की बात है कि एक लड़का था जिसका नाम था ऐमपिपिडी[13]। वह उस देश के दूर के एक उस छोटे से गॉव में रहता था जहॉ मोटलोपी[14] के पेड़ उगते थे और रात को भेड़िये चिल्लाते रहते थे।

ऐमपिपिडी अपने माता पिता के साथ रहता था। हर सुबह वह उठ कर अपना खाना ले कर अपने भेड़ों के झुंड को चराने के लिये जंगलों में दूर तक ले जाता। वहॉ जा कर वह सबसे ऊॅचे मोटलोपी पेड़ पर चढ़ जाता और वहीं से अपने जानवरों को देखता रहता।

उसको वहॉ बैठना बहुत अच्छा लगता था। वहॉ से वह दूर के नीले नीले पहाड़ देखता और वह इतना ऊॅचा होता कि चील उसका भाई होता और बादल उसकी बहिनें। उसकी बहिनें? पर बहिनों का खयाल ही उसके मन को दुखी कर देता क्योंकि उसके कोई बहिन नहीं थी।

जब कभी उसकी एक गाय भी इधर उधर हो जाती तो वह हल्के से सीटी बजा देता। उसकी सीटी से बड़ी धीमी और मीठी सी

---

[12] Mpipidi and the Motlopi Tree (Story No 30) – a Tiswana folktale from Botswana, Southern Africa, Africa. Adapted from "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Told by Johanna Morule

[13] Mpipidi – a name of an African man

[14] Motlopi Tree – see Glossary on www.sushmajee.com/folktales/motlomi.htm

धुन निकलती जैसे हनी बर्ड[15] किसी बैजर[16] को शहद के छत्ते की तरफ बुला रही हो। और तब वह गाता —

स्वर्र स्वर्र ओ मेरी कत्थई वाली इधर उधर मत जाना
स्वर्र स्वर्र नहीं तो तुमको गोगोमोडुमो खा जायेगा स्वर्र स्वर्र

यह सुन कर इधर उधर जाती वह गाय अपना सिर उठाती और चरती हुई ऐमपिपिडी के पास मोटलोपी के पेड़ की तरफ आ जाती। यह तरकीब ऐमपिपिडी को पेड़ के ऊपर नीचे चढ़ने उतरने और जानवरों को इधर उधर देखने से बचाती।

एक दिन ऐमपिपिडी अपने जानवरों को जंगल में और भी ज़्यादा दूर ले गया। वहॉ वह अपने चढ़ने के लिये मोटलोपी का एक ऊॅचा सा पेड़ ढूॅढ रहा था कि उसने एक हल्की सी आवाज सुनी – "गीं गीं।"

ऐमपिपिडी रुक गया और उसने फिर से उसे सुनने की कोशिश की। वह आवाज फिर से आयी – "गीं गीं।"

वह मोटलोपी की घनी शाखाओं के नीचे से हो कर यह देखने गया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी तो उसने देखा कि एक

[15] Honeybird – a drab colored bird confined to Sub-Sahara Africa. Unlike other honeyguides they do not feed on beeswax. See its picture above.
[16] Badger - an animal of skunk family – squirrel type

नयी बुनी हुई टोकरी में जानवरों की मुलायम खाल के ऊपर एक बच्चा लेटा हुआ था।

वह एक छोटी लड़की थी। उसको देख कर उसका दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। नहीं नहीं, वह उसको घर नहीं ले जा सकता। शायद वे उसकी कहानी के ऊपर विश्वास ही न करें और या फिर वे उसे किसी और को दे दें।

इसलिये उसने बच्ची को फिर से उसी टोकरी में रख दिया और उसने दूसरा कोई मोटलोपी पेड़ दूर की तरफ देखना शुरू किया जिस के नीचे वह उसको छिपा सके। एक मोटलोपी के पेड़ के नीचे उसे उस बच्ची को लिटाने की जगह मिल गयी।

फिर उसने अपने खाने में से दूध निकाला और उस बच्ची को पिलाया। जल्दी ही बच्ची खुश हो कर सो गयी। ऐमपिपिडी ने कॉटों वाले पेड़ों से कुछ शाखें तोड़ीं और उस बच्ची को जंगली जानवरों से बचाने के लिये उसके सोने की जगह के चारों तरफ लगा दीं।

उस शाम उसने उस बच्ची के बारे में किसी को नहीं बताया, बस वह बच्ची उसका अपना भेद ही रही।

उस दिन के बाद हर सुबह ऐमपिपिडी उस बच्ची के लिये बकरी का दूध ले कर जाता और अपने लिये खाना। हर सुबह वह अपने जानवरों को गहरे जंगल में चरने के लिये ले जाता और वहॉ जा कर

वह बड़ी सावधानी से उस मोटलोपी के पेड़ के पास जाता और बड़ी धीमे से गाता।

वह गाना सुन कर एक छोटी सी आवाज जवाब देती — "गीं गीं।" और इस तरह ऐमपिपिडी जान जाता कि बच्ची अभी भी ज़िन्दा है।

वह उसके चारों तरफ लगायी हुई बाड़ की एक डंडी हटाता, उसको गोद में उठाता और उसे दूध पिलाता। इस सारे समय वह गाता रहता।

जब बच्ची का पेट भर जाता तो वह उसको सावधानी से मोटलोपी पेड़ के नीचे उसी टोकरी में लिटा देता और उसे खाल ओढ़ा देता। फिर वह उस बाड़ की डंडी को उसी जगह रख देता जहॉ से उसने उसे हटाया था।

यह सब तब तक चलता रहा जब तक कि उसकी मॉ को यह एहसास नहीं हुआ कि ऐमपिपिडी उससे कुछ छिपा रहा है।

एक दिन उसने एमपिपिडी के पिता से कहा — "तुम इस लड़के के बारे में क्या सोचते हो? यह रोज इस बात पर क्यों अड़ा रहता है कि वही जानवरों को चराने के लिये ले जायेगा चाहे मौसम कितना ही खराब क्यों न हो।"

पिता ने इसमें और जोड़ा — "और वह अपने भाई को भी अपने साथ क्यों नहीं ले जाना चाहता? अगर वह उसको अभी से

अपने साथ ले कर नहीं जायेगा तो वह जानवर चराना कैसे सीखेगा? मैं कल उसके पीछे पीछे जा कर देखता हूँ।"

अगली सुबह जब ऐमपिपिडी जानवर चराने के लिये गया तो उसका पिता भी उसके पीछे पीछे हो लिया। वह उससे काफी दूर रहा ताकि वह उसको दिखायी न दे सके पर वह उसके इतना पास भी था कि वह अपने बेटे की सीटी बजाने की और गाने की आवाज सुन सके।"

ऐमपिपिडी सीटी बजाते हुए जानवरों को चराने की जगह ले गया।

गहरे जंगल में जा कर उसकी सीटी की आवाज रुक गयी। उसका पिता थोड़ा और तेज़ी से चला तो उसने देखा कि ऐमपिपिडी कितनी सावधानी से उस ऊँचे मोटलोपी पेड़ के पास पहुँचा।

जब वह उस पेड़ के पास पहुँचा तो उसके पिता ने उसको धीमे धीमे गाते हुए सुना और फिर उसके बाद सुनी एक छोटी सी आवाज — "गीं गीं।"

उसकी ऑखें आश्चर्य से बड़ी हो गयीं। क्या यह एक बच्चे की आवाज नहीं थी?

उसने ऐमपिपिडी को वहीं लगे बाड़े की एक शाख हटाते देखा, फिर उसने उसको एक बच्चे को गोद में उठाते देखा और फिर उसको उस बच्चे को दूध पिलाते देखा।

जब बच्चे ने दूध पी लिया तो ऐमपिपिडी ने उसको उसी पेड़ के नीचे उसी टोकरी में लिटा दिया और उसे खाल ओढ़ा दी। फिर उसने बाड़ की वह शाख भी वहीं वापस रख दी।

तो यह था उसके बेटे का भेद। उसका पिता तुरन्त ही घर वापस लौट गया और अपनी पत्नी को जा कर वह सब बताया जो कुछ उसने जंगल में देखा था।

अगली सुबह जब अँधेरा ही था तो ऐमपिपिडी का पिता उसकी माँ को ले कर उस मोटलोपी पेड़ के पास गया जहाँ वह बच्ची थी और गाँव में सब लोगों के जागने से पहले ही वे दोनों उस बच्ची को ले कर घर आ गये।

उस दिन भी रोज की तरह ऐमपिपिडी ने अपना खाना लिया, बकरी का दूध लिया और जानवरों को ले कर उनको चराने के लिये जंगल की तरफ चल दिया।

उस दिन भी वह बड़ी सावधानी से उस मोटलोपी पेड़ के पास पहुँचा। जब वह उसके पास पहुँच गया तो उसने धीमी आवाज में अपना वही गीत गाया जो वह रोज गाता था।

फिर उसने सुनने की कोशिश की पर उसके जवाब में कोई छोटी आवाज नहीं आयी। उसने अपनी धुन फिर से गायी पर फिर भी कोई जवाब नहीं आया।

उसने काँपती आवाज में अपनी धुन बार बार दोहरायी पर उस पेड़ से कोई आवाज नहीं आयी। सो ऐमपिपिडी ने शाख हटायी तो

देखा तो वह बच्ची तो वहॉ से जा चुकी थी। वह वहीं उस मोटलोपी के पेड़ के नीचे लेट गया और रोने लगा।

शाम को वह अपने जानवरों को ले कर घर लौटा। जब वह अपनी झोंपड़ी में घुसा तो जा कर अन्दर बैठ गया। खुली आग का धुँआ उसकी ऑखों में लग रहा था। उसकी ऑखों में ऑसू आ गये और उसका दिल डर और दुख से भारी हो गया।

ऐमपिपिडी की मॉ ने उससे पूछा — "बेटे, तुम क्यों रो रहे हो?"

ऐमपिपिडी बोला कि उसकी ऑखों में धुँआ लग रहा था। पर जब उसकी मॉ ने उसको ताजा हवा में बाहर जाने के लिये कहा तो उसने अपना सिर ना में हिला दिया।

मॉ बोली — "ऐमपिपिडी, हमें मालूम है कि तुम उस बच्ची के लिये रो रहे हो जिसको तुमने मोटलोपी पेड़ के नीचे छिपा रखा था।"

यह सुन कर ऐमपिपिडी तो हक्का बक्का रह गया और उसने रोना बन्द कर दिया।

उसकी मॉ बोली — "आओ मेरे साथ आओ।"

उसने ऐमपिपिडी के पिता को भी बुलाया। फिर वे सब अपनी सोने वाली झोंपड़ी में गये।

दरवाजे पर ऐमपिपिडी ने धीमे से वही गीत गाया जो वह मोटलोपी के पेड़ के पास गाता था और फिर उन सबने एक छोटी से आवाज सुनी — "गीं गीं।"

ऐमपिपिडी ने पहले अपनी मॉ की तरफ देखा और फिर अपने पिता की तरफ।

उसका पिता बोला — "हॉ ऐमपिपिडी, हम जानते हैं कि यही तुम्हारा भेद था। क्या यही वजह थी जिसकी वजह से तुम अपने भाई को जानवरों के चराने के लिये नहीं ले जा रहे थे?"

ऐमपिपिडी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने दूध की बोतल ली और रोज की तरह बच्ची को दूध पिलाने बैठ गया। उसकी मॉ ने देखा कि ऐमपिपिडी उस बच्ची को कितना प्यार करता था।

वह बोली — "अपनी छोटी बहिन कैनील्वे[17] को मुझे दो।" ऐमपिपिडी ने बच्ची को अपनी मॉ को दे दिया। वह अपनी छोटी बहिन को अपनी मॉ की बॉहों में देख कर बहुत खुश हो गया।

कैनील्वे बड़ी हो कर बहुत ही सुन्दर लड़की बन गयी और एक प्यार करने वाली बहिन भी। उसका नाम हर एक को याद दिलाता था कि वह कहीं से आयी थी – कैनील्वे यानी "जो दी गयी हो।"

[17] Keneilwe – name of the girl found in the woods.

3 माडीपैटसैने[18]

यह लोक कथा दक्षिण अफ्रीका देश के अन्दर स्थित लिसोठो देश की लोक कथाओं से ली गयी है। बड़े आदमी लिसोठो में माडीपैटसैने की यह कहानी उन बच्चों को सुनाते हैं जो अपने बड़ों का कहना नहीं मानते।

एक दिन माडीपैटसैने की मॉ ने उसको बुलाया — "ही–ला[19], माडीपैटसैने।"

"आयी मे[20]।"

जब वह अपनी मॉ के पास आयी तो उसकी मॉ ने उससे कहा — "सुनो बेटी, ये टोकरी लो और हमारे लिये मैदान से कुछ जड़ें ले आओ और सूप बनाने के लिये कुछ जंगली पालक भी ले आना।"

माडीपैटसैने ने टोकरी उठाई और मैदान की तरफ चल दी। जड़ इकट्ठा करने के लिये उसे काफी दूर जाना पड़ा। उसने जड़ इकट्ठा करने के लिये कई जगह खोदा।

---

[18] Mmadipetsane (Story No 11) – a folktale from Lesotho, Southern Africa.
Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
This tale is retold by Minnie Postma, and translated by Leila Latimer in English

[19] Hee-Laa word is used to address in place of "O" or "Listen" in Basotho language of Lesotho.

[20] Mme – pronounced as "May". This word is used to address ladies in place of Madam or mother in Lesotho

जब वह जड़ निकाल लेती थी तो उसको वह घास पर मार मार कर उसकी मिट्टी साफ करती थी और फिर अपनी टोकरी में रख लेती थी।

पास में ही एक आदमखोर राक्षस लैडीमो[21] आ रहा था। उसने उस लड़की को देखा और उस लड़की ने भी उस राक्षस को देखा।

वह राक्षस बहुत ही बदसूरत था। पेड़ के बराबर ऊँचा था और काली रात से भी ज़्यादा काला था। उसके दाँत जंगली सूअर के दाँतों से भी बड़े थे।

वह माडीपैटसैने से बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहाँ क्या खोद रही हो?"

उसकी आवाज इतनी भयानक थी जितनी कि बारिश की चिड़िया जब पत्थरों में अपने अंडे देने के लिये जमीन पर आती है तब वह जैसी आवाज करती है।

पर माडीपैटसैने उससे डरी नहीं। उसने तो उसको जवाब भी नहीं दिया। उसने एक बार माडीपैटसैने को फिर से पुकारा — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहाँ क्या खोद रही हो?"

इस बार माडीपैटसैने ने उसको ऐसी आवाज में जवाब दिया जैसे हवा सारे मैदान में फैल गयी हो — "मैं लैडीमो के खेत की जड़ें खोद रही हूँ और पालक के नरम पत्ते तोड़ रही हूँ जो गोबर के ढेर के पास उग रहे हैं।"

[21] Ledimo – the name of the monster

वह राक्षस उसके पास आया और उसको पकड़ कर खाने की कोशिश करने लगा क्योंकि वह तो आदमखोर था। पर वह लड़की उसके हाथ से खेत के चूहे की सी तेज़ी से बाहर निकल गयी और एक बिल में जा कर छिप गयी।

वह बिल लैडीमो जैसे बड़े आदमखोर के लिये बहुत छोटा था सो वह उसको नहीं पकड़ सका। वह ज़ोर से बोला — "रुक जा ओ लड़की। मैं बहुत होशियार हूँ और तुझे पाने का कोई न कोई रास्ता निकाल ही लूँगा।"

कह कर उसने अपने होठ चाटे और थूक निगला। उसके थूक निगलने की आवाज ऐसी थी जैसे कोई मेंढक पानी में कूदता है।

पर माडीपैटसैने उसके ऊपर खूब हँसी। उसने उसका खूब मजाक बनाया और कहा कि वह तो रेंगने वाला जानवर जैसा लगता है। यह कहते हुए उसने गाया —

साई गोकगो[22], साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

उसका यह गीत लैडीमो को बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उसको ऐसा लग रहा था जैसे उसके कान में कीड़े काट रहे हों। जब वह उसे और ज़्यादा नहीं सुन सका तो वह अपने घर वापस चला गया।

उस शैतान लड़की ने खेत के चूहे की तरह से बिल में से झाँका और जब पक्का कर लिया कि वह राक्षस चला गया तो वह बाहर

[22] Sai Kgokgo

निकल आयी और घास और झाड़ियों के बीच से होती हुई अपने घर आगयी।

घर आ कर वह बोली — "ये रहीं जड़ें मे।"

मॉ ने पूछा — "पर बेटी अब तक तुम कहॉ थीं? तुमको तो बहुत देर हो गयी।"

"ओ मे, मुझे इनको लेने के लिये बहुत दूर लैडीमो के खेत में जाना पड़ा। पास में कहीं कुछ मिला ही नहीं।"

मॉ बोली — "तुम सुनती क्यों नहीं हो? क्या तुम्हारे कानों को सूअर ने काट लिया था जब तुम छोटी थीं? मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि तुम उससे दूर रहा करो पर तुम सुनती ही नहीं।"

वह शैतान लड़की बोली — "उॅह, मैं उससे नहीं डरती।"

मॉ बोली — "तुम उससे क्यों नहीं डरतीं? वह किसी भी सरदार से बहुत बड़ा है। वह किसी भी उस पानी के सॉप से ज़्यादा खतरनाक है जो तालाबों में रहते हैं।"

"ज़रा मेरी तरफ देखो मे।" माडीपैटसैने बोली। "मैं कितनी छोटी और कमजोर हूॅ पर मैं उससे कहीं ज़्यादा होशियार हूॅ। वह मुझे नहीं पकड़ सकता क्योंकि मैं फोकोज्वे गीदड़[23] की तरह होशियार हूॅ।"

[23] Phokojwe jackal – name of the jackal in Eastern and Southern African Countries.

मॉ बोली — "तुम अपने आपको समझती क्या हो? तुम कहना क्यों नहीं मानती हो?"

माडीपैटसैने फिर बोली — "मे मुझे मालूम है कि गीदड़ कैसे काम करता है। मैं जमीन के अन्दर एक बिल में छिप जाती हूॅ और राक्षस लैडीमो उस बिल के अन्दर जा ही नहीं सकता। उसके अन्दर जा कर मैं उसको खिझाती रहती हूॅ –

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

"फिर क्या होता है?"

माडीपैटसैने बोली — "फिर वह गुस्सा हो जाता है। वह पूहू बैल[24] की तरह जमीन पर पैर पटकता है और मैं केवल उसके पैर पटकने की आवाज सुनती हूॅ।"

उसकी मॉ ने फिर अपनी बेटी से कहा कि वह ऐसा न करे पर माडीपैटसैने ने उसकी उस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

अगले दिन सुबह जब उसकी मॉ झरने से अपने मिट्टी के बरतन में पानी भर रही थी तो माडीपैटसैने ने फिर से अपनी टोकरी उठायी और लैडीमो के खेत की तरफ जड़ें खोदने और जंगली पालक की नरम पत्तियॉ तोड़ने भाग गयी जो गोबर के ढेर के पास उग रही थीं।

[24] Puhu bull

लैडीमो ने देखा कि माडीपैटसैने घुटने के बल बैठी हुई जमीन खोद रही थी। वह फिर बोला — "ही–ला सुबह सुबह इतनी जल्दी तुम यह जमीन क्यों खोद रही हो माडीपैटसैने?"

माडीपैटसैने बोली — "मैं लैडीमो के खेत में से जड़ें खोद रही हूँ और वह जंगली पालक चुन रही हूँ जो गोबर के ढेर के पास उग रहा है।"

लैडीमो उसको पकड़ने के लिये उसकी तरफ बढ़ा पर वह पिछली बार की तरह से फिर से खेत के चूहे की तरह उसके हाथ से फिसल कर घास और झाड़ियों मे से होती हुई बिल में घुस गयी जो गीदड़ ने उसके लिये खोद रखा था।

लैडीमो फिर उसको नहीं पकड़ सका सो वह फिर गुस्सा हो गया। उसको माडीपैटसैने के शरीर की खुशबू बहुत ज़ोर से आ रही थी जो उसको उसके मीठे और रसीले मॉस को खाने के लिये लुभा रही थी।

उस बिल के बाहर से वह उसकी आवाज सुन रहा था —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

यह आवाज उसको तीर जैसी लग रही थी। लैडीमो जानता था कि वह खुद बहुत होशियार है, गीदड़ से भी ज़्यादा चालाक है पर माडीपैटसैने इस बात को नहीं जानती थी। लैडीमो उससे बहुत गुस्सा था पर वह उससे कुछ कह नहीं रहा था।

वह उस बिल के पास बाहर इस तरीके से बैठ गया जैसे कोई बुढ़िया अपना खाना लाने के लिये अपने बच्चों का इन्तजार करती है। वह एक ऐसी बिल्ली की तरह बैठा हुआ था जैसे वह छेद से चूहे के बाहर निकलने के इन्तजार में बैठी रहती है।

पर माडीपैटसैने उससे भी ज़्यादा चालाक थी। वह चूहे की तरह चालाक थी। वह चुपचाप बैठी हुई थी और लैडीमो के जाने का इन्तजार कर रही थी।

तब लैडीमो ने एक तरकीब सोची जो माडीपैटसैने को उस छेद में से जरूर ही बाहर निकालेगी।

"माडीपैटसैने तुमको बाहर निकलना ही पड़ेगा। सूरज अपने पूरे ज़ोर से चमक रहा है। तुम्हारी माँ पहले से ही एक बड़ी चट्टान पर खड़ी है और तुमको ढूँढ रही है। वह जड़ों और पालक के पत्तों का इन्तजार कर रही है क्योंकि उसे भूख लगी है।"

माडीपैटसैने ने उसको अन्दर से ही फिर चिढ़ाया —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

यह सुन कर वह इतना गुस्सा हुआ कि टूटे हुए पेड़ की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

माडीपैटसैने को मालूम था कि वह अभी मरा नहीं है सो वह बिल के अन्दर चुपचाप बैठी रही। जब उसको भूख लगेगी तब वह

वे जड़ें खा लेगी जो उसने इकट्ठा की हैं पर वह अपनी इस जगह से हिलेगी भी नहीं।

अब लैडीमो ने एक और तरकीब सोची कि वह उसकी मॉ की आवाज में बोलेगा। सो वह ऊॅची आवाज में बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, मेरी बच्ची, तुम कहॉ हो? देखो सूरज पश्चिम में पेड़ों के पीछे डूबने वाला है। अब तो आ जाओ।"

लेकिन माडीपैटसैने भी बेवकूफ नहीं थी। वह लैडीमो पर हॅस रही थी और उसको चिढ़ा रही थी —

साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई गोकगो, साई साई साई

ओह तो क्या तुम मेरी मॉ हो? तुम जो बबून की तरह बदसूरत हो। तुम्हारे दॉत जंगली सूअर की तरह हैं और तुम्हारा पेट बीयर के बड़े बरतन की तरह है। भूल जाओ माडीपैटसैने को।"

लैडीमो फिर चुपचाप बैठ गया और माडीपैटसैने की यह सब बातें सुनता रहा और सोचता रहा और सोचता रहा और सोचता रहा कि वह उसको उस बिल में से बाहर निकालने के लिये क्या करे। शायद उसको अपनी आवाज और मीठी और मुलायम बनानी पड़ेगी।

सो उसने उसको फिर पुकारा — "माडीपैटसैने, मेरी प्यारी बेटी तुम कहॉ हो? बहुत देर हो चुकी है। देखो सूरज अब डूबने ही वाला है। वह अब पेड़ों की शाखों की पीछे भी चला गया है।"

उसने फिर उसको चिढ़ाया — "साई साई साई, गोकगो। क्या तुम मेरी मॉ हो? तुम तो इतने खुरदरे हो जितनी कि एक चट्टान। मे की आवाज तो उस रेत की तरह चिकनी है जो पानी के किनारे धोती है। साई साई साई गोकगो।"

और वह बिल के अन्दर से हॅस दी।

इस बार लैडीमो बहुत मुलायमियत से बोला — "माडीपैटसैने, बेटी घर आ जाओ। मैं जड़ों और पालक के पत्तों का इन्तजार कर रही हूॅ। देखो अब तो सूरज भी पश्चिम में पहाड़ियों की चोटी को छू रहा है।"

पर उसकी आवाज अभी भी बहुत ही सख्त और मजबूत थी। वह माडीपैटसैने की मॉ की आवाज से ज़रा भी नहीं मिलती थी।

बिल के अन्दर से माडीपैटसैने ने जवाब दिया — "जाओ और जा कर सोने की कोशिश करो, लैडीमो। मैं तुमसे पहले ही कह चुकी हूॅ कि जब मेरी मे बोलती है तो उसकी आवाज रेत के छोटे छोटे दानों की तरह होती है जो एक बच्चे के पैरों को भी तकलीफ नहीं पहुॅचा सकती अगर वह उस पर चले तो।"

और जब गोल गोल सूरज पश्चिम में पहाड़ियों के पीछे चला गया तो माडीपैटसैने ने लैडीमो को घर जाते हुए सुना। चूहे की तरह से वह बहुत ही चुपचाप बिल में से निकली और अपने घर भाग गयी।

उस रात लैडीमो को एक बहुत ही ज़ोरदार विचार आया। सो वह रात में ही घास के ऊपर खरगोश की तरह उस बिल की तरफ भागा जिस बिल में माडीपैटसैने उससे हर बार छिपती थी।

उसने अपने बड़े बड़े हाथों से वह बिल पत्थरों से भर दिया और उसके ऊपर का हिस्सा केवल इतना खुला छोड़ दिया जिसमें माडीपैटसैने का सिर आ जाये और फिर वह सोने चला गया।

अगली सुबह उस कहना न मानने वाली लड़की ने फिर अपनी टोकरी उठायी और लैडीमो के खेत की तरफ जड़ें खोदने और पालक के पत्ते तोड़ने चल पड़ी।

उस दिन लैडीमो उस लड़की को पकड़ने के लिये सुबह जल्दी ही निकल पड़ा। वह अपने खेत पर आया और बोला — "ही–ला माडीपैटसैने, तुम यहॉ क्या खोद रही हो?"

लड़की ने जवाब दिया — "मैं लैडीमो के खेत से जड़ें खोद रही हूँ।" यह सुन कर वह फिर से गुस्सा हो कर उसकी तरफ दौड़ा।

लड़की भी खेत के चूहे की तरह तेज़ी से दौड़ कर अपने बिल में जा कर छिप गयी पर इस बार उसको यह नहीं पता था कि वह बिल पहले ही सारा का सारा पत्थर से भरा हुआ था।

हर बार की तरह उसने एक छोटे चूहे की तरह उस बिल के अन्दर ठीक से छिपने की कोशिश की पर उसके अन्दर तो उसका केवल सिर ही आ पाया। उसका सारा शरीर तो बाहर ही रह गया क्योंकि वह सारा बिल तो पत्थरों से भरा हुआ था।

यह देख कर लैडीमो ज़ोर से हॅसा — "हा हा हा।" और एक ऐसी आवाज निकाल कर जैसे बच्चे तालाब के पानी में छप छप करते हैं उसने अपने होठ चाटे और उस बच्ची को पकड़ कर जो अपनी मॉ का कहना नहीं मानती एक थैले में रख कर चल दिया।

माडीपैटसैने रोती और चिल्लाती रही — "ऊॅ ऊॅ ऊॅ। मैं अब ऐसा नहीं करूॅगी जब तक में बड़ी नहीं हो जाऊॅगी।

जब तक मेरे सारे दॉत इन पेड़ों के पत्तों की तरह से नहीं गिर जायेंगे। जब तक मेरी ऑखें नीली नहीं हो जायेंगी जैसे गोरे लोगों की होती हैं। मै यहॉ जड़ खोदने के लिये अब कभी नहीं आऊॅगी। मुझे जाने दो।"

पर लैडीमो ने कुछ नहीं सुना। वह उसका रोना सुन ही नहीं रहा था वह तो उसका चिढ़ाना सुन रहा था — "साई साई साई, गोकगो गोकगो।"

उसने अपने थैले में गॉठ बॉधी और उसको अपने कन्धे पर डाला और अपने घर चल दिया जहॉ जा कर अब वह उसको खायेगा।

तो यह था बच्चो इस कहना न मानने वाली लड़की का अन्त और यह थी उसकी सजा।

4 मॉ जो धूल में बदल गयी[25]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के मलावी देश में कही सुनी जाती है। एक बार की बात है कि भगवान सूरज की एक बेटी थी। अपने पिता की तरह से वह भी एक चमकता हुई तारा थी। बल्कि वह अपने पिता सूरज से भी ज़्यादा चमकदार थी।

वह तारों की सीपियों के बने जूते पहनती थी और अपनी उॅगलियों पर, पैरों में, कलाइयों में और कमर में गिरते हुए तारों की चमक पहनती थी।

इन सबको पहन कर वह बहुत चमक जाती और सूरज से भी ज़्यादा दूर तक अपनी रोशनी फैलाती। वह वहॉ बड़ी अक्लमन्दी और प्रेम के साथ राज करती थी।

एक दिन वह अपने राज्य के अनगिनत ग्रहों को देखने के लिये निकली तो उसने दूर एक कोने में एक ग्रह देखा। वह रास्ते से थोड़ा हट कर था – करीब करीब सूरज की उॅगलियों के कोने पर। वह हरे और नीले रंग का था।

उसने उसको फिर से देखा और सूरज से बोली — "उस ग्रह पर, वहॉ मुझे अपनी गद्दी चाहिये पिता जी। मैं अपनी ज़िन्दगी उस हरे और नीले रंग की ठंडक में गुजारना चाहती हूॅ।

[25] Mother Who Turned in to Dust (Story No 29) – a folktale from Malawi, Southern Africa.
Adapted from the book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.
Told by Kasia Malaka. A creation story

सूरज ने एक आह भरी, फिर उसने और सितारों की तरफ देखा और फिर एक आह भरी। उसकी ऑखें आगे के बहुत साल देख सकती थीं।

उसने कहा — "सब कुछ तुम्हारा है बेटी। तुम जहॉ जाना चाहो वहॉ जाओ और जो करना चाहो वह करो। पर इतना जान लो कि अगर तुम वहॉ गयीं तो तुमको अपनी बहुत सारी ताकत यहीं छोड़ कर जानी पड़ेगी।

तुम्हारा साफ रोशनी का यह चमकीला कोट, तारों की सीपी के बने तुम्हारे ये जूते, तुम्हारी पाजेब[26] और ये कंगन और माला जो सुबह और शाम के तारों की चमक से बने हैं – ये सब तुम वहॉ नहीं ले जा सकोगी।

उस ग्रह का हरा रंग बहुत ही नाजुक है वह तुम्हारी चमक की गरमी को सहन नहीं कर सकता और नीला रंग तो बिल्कुल ही सूख जायेगा।

हॉ तुम अपनी इस चमकीली पोशाक के बदले में तीन वरदान[27] लेना चाहो तो ले सकती हो जो तुरन्त ही बिना किसी शर्त के पूरे किये जा सकते हैं।

वह बोली — "ठीक है तो मुझे सोचने दीजिये पिता जी।"

[26] Translated for the word "Anklet" – an ornament worn in the feet

[27] Boon

सो वह बरसों तक सोचती रही कि वह क्या करे। क्योंकि इस दुनिया में तो तारों और सूरज का यही तरीका है कि किसी भी काम को होने में बरसों लगते है हालॉकि उनके लिये वह समय एक पलक झपकने के बराबर का ही होता है।

सो बरसों सोचने के बाद उसने अपना इरादा बना लिया। उसने सोच लिया कि वह अपना कोट, अपना सुबह का शाल[28], तारों की सीपी से बने अपने जूते, शाम से बनी अपनी सैन्डिल, शाम के बाद की चमक से बने अपने स्लिपर, सब कुछ यहीं छोड़ देगी और उस हरे नीले ग्रह पर जायेगी।

उसने यह सब सूरज को सौंपा और बोली — "पिता जी, मैने सोच लिया है। अब मैं हरे और नीले ग्रह पर जाऊँगी और उस ग्रह की मॉ बनूँगी।"

सूरज बोला — "तुमको जो चाहिये वह सब तुम ले जाओ पर साथ में यह भी सुनती जाओ कि तुम यहॉ पर बहुत याद की जाओगी। हालॉकि हम तुमको यहॉ से हमेशा और रोज देखते रहेंगे फिर भी यहॉ आने के लिये तुम्हारा हमेशा स्वागत है।

और एक बात और कि हमारी ये किरनें तुम्हारे इस नये शरीर के लिये तुम्हारे उस छोटे से ग्रह पर हमेशा ही अच्छी नहीं रहेंगीं।"

[28] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

सो सूरज के चारों तरफ अँगूठियाँ, पाजेबें, कंगन और तारों की मालाओं की कतार लग गयी और सारे आसमान में बिखर गयी जैसे दूध बिखर जाता है।

वे सब इस तरह से सज गये कि सूरज की बेटी उनको अपने नये हरे और नीले ग्रह से देख सके और याद रख सके कि वह कहाँ से आयी थी।

आखिर में वह चली, पहले एक तारे पर चढ़ कर जो समय और दूरी के साथ साथ अपनी एक लाइन बनाता गया। उसके बाद वह दिन की सुबह की कोमलता में रोशनी की एक किरन पर चढ कर गयी। पर अभी भी उसको बहुत दूर जाना था।

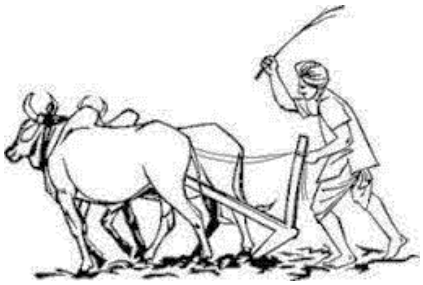

उसने अपने साथ एक हल ले लिया था, एक ओखली और एक मूसल ले लिया था, एक अनाज बोने वाली टोकरी ले ली थी और एक पानी का बरतन ले लिया था।

उसने एक पकाने का बरतन, बॉस और लकड़ी की बनी कुछ प्लेटें, एक छोटी सी कुल्हाड़ी, एक चटाई और एक बड़ा सा ढकने का कपड़ा भी ले लिया था।

आखीर में वह रोशनी की पहली किरन पर सवार हो कर हरे नीले ग्रह पर आ गयी।

हरे नीले ग्रह पर आने के बाद उसको पता चला कि आसमान में वह ग्रह दूर से ऐसा हरा नीला क्यों दिखायी दे रहा था। वहॉ जंगल और घास के मैदान इतने सुन्दर थे कि उनको देख कर दिल खुश हो जाता था और उनके लिये पहले से भी ज़्यादा नरम हो जाता था।

उसने वहॉ उगे हुए सब पेड़ पौधों की तरफ बड़े प्यार से देखा और उसकी उस प्यार भरी नजर पा कर वे और ज़्यादा खुशी से बढ़ने लगे। हरी चीज़ें और ज़्यादा हरी हो गयीं।

वहॉ झाड़ियॉ थी, पेड़ थे और उन सबके उस पार थे रोशनी के कई रंगों के फूल जो उसके घर से बहुत दूर से आये थे – पीले, नारंगी, नीले, जामुनी, सफेद, गुलाबी, वसन्ती, हल्के हरे, हल्के नीले और इनके बीच के अनगिनत रंग।

वहॉ आ कर वह बोली — "बच्चे, अब मुझे बच्चे चाहिये, बहुत सारे बच्चे चाहिये। मुझे प्यार करने के लिये बच्चे चाहिये। घास में भागने के लिये बच्चे चाहिये, गाने के लिये बच्चे चाहिये, हॅसने के लिये बच्चे चाहिये और पहाड़ों पर गूॅजने के लिये आवाजें चाहिये।

पुकारने के लिये और गोद में बिठाने के लिये और जब मैं बूढ़ी हो जाऊॅ और मुझे किसी की सहायता की जरूरत हो तब मेरी देखभाल करने के लिये मुझे बच्चे चाहिये।

जब मैं कमजोर हो जाऊँगी और जीते जीते बेहोश होने लगूँगी तब वे बच्चे मेरी ताकत बनेंगे और जब मेरा समय आयेगा तब वे बच्चे मुझे सुला देंगे।"

उसकी इच्छा पूरी कर दी गयी और वहाँ बहुत सारे बच्चे हो गये। उसके चारों तरफ बच्चे ही बच्चे, इधर बच्चे उधर बच्चे, सामने बच्चे पीछे बच्चे। वहाँ बेटे थे लम्बे, पतले और इतने ताकतवर कि वे एक पैर पर घंटों खड़े रह सकते थे।

और कुछ वहाँ पर कोमल और दयावान बच्चे भी थे जो अपनी चीज़ें उनसे बाँटते थे जो उतने मजबूत और तेज़ नहीं थे कि वे उतनी देर तक खड़े रह सकें।

वहाँ बेटियाँ थीं जो लम्बी और मजबूत थीं अपने भाइयों की तरह। वे भाग सकतीं थीं और हिरन की तरह से सारा दिन कूद सकती थीं और फिर भी नहीं थकतीं थी।

और वहाँ कुछ ऐसी बेटियाँ थी जो बहुत ही कोमल और प्यारी थीं जैसे फूल, अपनी माँ जितनी प्यारी और अपने भाइयों और पिता जैसी दयावान। वे सूरज की बेटी के चारों तरफ घूमतीं और उसको माँ कह कर पुकारतीं।

और इस तरह वह तारा, सूरज की बेटी जो आसमान पर अपनी चमक से राज करती थी, इन सब बच्चों की माँ बन गयी जो हरे नीले ग्रह पर पैदा हुए थे।

वह उन सबको प्यार करती थी और हर एक की अच्छी तरह से देखभाल करती थी – लम्बे और ठिगने बच्चे, मोटे और पतले बच्चे, काले पीले और सुनहरी बच्चे। वह दिन रात सबकी देखभाल करती थी।

उनमें से कुछ बच्चे ऐसे थे जो केवल चलते थे कभी भाग नहीं सकते थे और कुछ ऐसे भी थे जो केवल भाग सकते थे और कभी चल नहीं सकते थे।

उनमें से कुछ बच्चे माइनर[29] थे जिनको सब कुछ अपने लिये ही चाहिये था और कुछ बच्चे नथिंग[30] वाले थे जिनके पास "नथिंग" शब्द के अलावा और कुछ नहीं था।

वहॉ "आई विल बी बैक"[31] वाले बच्चे भी थे जो आये और तुरन्त ही चले गये और कुछ "नौट मी" वाले बच्चे थे जो कभी यह नहीं मानते थे कि उन्होंने कभी कुछ गलत किया है।

उनमें से कुछ "मैं नहीं जानता"[32] वाले बच्चे थे, कुछ "उसने शुरू किया"[33] वाले बच्चे थे। कुछ "उसने कहा"[34] वाले बच्चे थे जो बहुत ही नीच स्वभाव के थे और वे दूसरों का बिल्कुल भी खयाल नहीं रखते थे। और भी बहुत तरह के बच्चे थे।

[29] Miner – everything is mine
[30] Nothing – who had nothing
[31] I will be back
[32] I don't know
[33] He started it
[34] She asked for it

पर वह सबकी देखभाल करती थी। वह उन सबके लिये बारिश लाती थी। आसमान की हालत देखते हुए वह उनके लिये सूरज और उसकी धूप भी लाती थी।

और जब पौधों के आराम का समय आता तो वह उनके लिये पतझड़ ले कर आती और जब उनको नींद की जरूरत होती तो जाड़ा ले कर आती।

वह अपने बच्चों की देखभाल करती जब वे जगे हुए होते और जब वे सो रहे होते। सुबह वह हर किसी के उठने से पहले उठ जाती और एक बड़ी सी झाड़ू ले कर सारी सफाई करती।

फिर वह अपना हल ले कर अपने बच्चों के लिये अन्न उगाती। उसके बहुत सारे बच्चे बहुत खाते थे फिर भी वह उन सबके खाने के लिये काफी खाना रखती थी।

इस तरह काफी समय निकल गया। हालॉकि यह "सब बच्चों की मॉ"[35] बहुत ही ताकतवर थी पर फिर भी क्योंकि अब उसको वहॉ रहते रहते बहुत साल हो गये थे इसलिये वह अब बहुत थक गयी थी। धरती के बच्चे भी अब बदल गये थे।

एक बार उसने सूरज से शिकायत की थी — "वे सब बहुत बदल गये हैं। अब मैं उनके लिये कुछ भी नहीं रह गयी हूॅ। मुझे तो शक है कि वे मुझे देखते भी हैं या नहीं।"

[35] Mother of all Children

सूरज बोला — "याद रखो बेटी, वे सब तुम्हारे बच्चे हैं। उन्होंने तुमसे अपने आपको दुनियॉ में लाने के लिये नहीं कहा था तुम खुद उनको दुनियॉ में ले कर आयी थीं।

उनके साथ मिल कर काम करो तो तुमको खजाना वहॉ मिलेगा जहॉ तुम उसको सबसे कम उम्मीद करती होगी और उस समय मिलेगा जब तुम उसको सबसे कम उम्मीद करती होगी।"

उसने अपने पिता की बात मानी और वैसा ही किया। उसने अपने उन बच्चों की सेवा करनी शुरू की जिन्होंने लड़ना शुरू कर दिया था। वे न तो अपने लिये कुछ करते थे और न ही एक दूसरे की सहायता करते थे बस हर समय एक दूसरे की शिकायत करते रहते थे।

"मुझे भूख लगी है।", "मुझे प्यास लगी है।", मुझे यह चाहिये।", "मुझे वह चाहिये।", "मुझे उठा कर ले चलो।", "मुझे अपनी गोद में बिठा लो।", "तुम तो मॉ हो, तुम ही तो मुझे इस दुनियॉ में ले कर आयी हो। तुम ही मेरी देखभाल करो।"

और "सब बच्चों की मॉ" ने सब दुखी लोगों का इलाज किया, भूखों को खाना दिया, प्यासों को पानी दिया और उनको आदमी और औरत बनाया। फिर वे दूर जगहों में घूमते रहे। वे कभी कभी तो वापस आ जाते थे या फिर कभी वापस नहीं भी आते थे।

अब तक वे सब इतने नीच और जंगली हो गये थे कि वे एक दूसरे को जान से मार देते थे।

माँ का दिल दुखने लगा। जहाँ वह पहले सिर ऊँचा करके शान से रहती थी वहाँ अब उसका सिर दर्द और शरम से नीचे झुका जाता था क्योंकि उसके बच्चे हर चीज़ के लिये उसी को जिम्मेदार ठहराते थे।

उनके पास अपनी माँ के लिये कोई अच्छा शब्द नहीं था और यह दुख उसके दुखी दिल को टुकड़े टुकड़े करके तोड़ रहा था।

यही बात हवा में भी थी। वह ज़ोर से चलने लगी थी और पेड़ों को गिराने लगी थी।

सूरज की बेटी अब जब अपना काम करती थी तो वह केवल अपने लिये ही गाती थी। वह अब जब सुबह होती तो ठंडी हवा के रूप में गाती और सोयी हुई चिड़ियों को जगाती।

जब बारिश बहुत तेज़ पड़ती और वह खुली जमीन को छीलती हुई उसको समुद्र की तरफ ले जाती तब वह उस बारिश की ज़ोर की आवाज में गाती।

वह उस शान्त टप टप में भी गाती जो दुनियाँ के पहाड़ों के ऊपर पंखों की तरह पड़ती। और उन ठंडी जगहों में भी गाती जहाँ बारिश बरफ में बदल जाती थी। और उन जगहों में भी गाती जहाँ बारिश ओलों के रूप में पड़ती।

वह सारे दिन गाती हुई सारे आसमान में घूमती रहती जैसे वहॉ कोई था जो उसकी सहायता करता था। फिर वह नीचे अपने काम को देखती और फिर और गाती।

कभी वह जब जंगल में आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा कर रही होती और या फिर ऐसे मैदानों मे होती जहॉ लकड़ी बहुत होती तो वह ऐसे जंगल के बारे में गाती जिनमें से कुछ को उसके घूमते हुए बच्चे काट देते।

वे उन पेड़ों के सारे के सारे तने ले जाते जो इतना बड़ा होने के लिये सालों लेते और धरती बेचारी अधमरी सी पड़ी रह जाती।

"सब बच्चों की मॉ" जानती थी कि उसके बच्चे अब धरती की कोई परवाह नहीं करते थे। वे उसको वेशकीमती धातु को ढूँढने के लिये खोदते रहते पर फिर उसके उन घावों को ऐसे ही छोड़ देते।

जब वह धरती पर घूमती तो वह यह गीत गाती कभी धीरे से तो कभी ज़ोर से ...

तुम मुझे अपने दिल की इच्छा के पूरा होने तक जोतो और अन्न काटो
जब तक तुम मुझे नंगा नहीं कर देते घायल नहीं कर देते
सूखे को सजा देते हुए मुझे बंजर नहीं कर देते
भारी बारिश मेरे मॉस को तकलीफ देती है
सो जो भी यहॉ से गुजरता है मुझ पर थूकता है

और मैं सब सहती हूँ, मैं जो मॉ हूँ और देने के लिये पैदा हुई हूँ
मैं अपने लिये कुछ भी नहीं बचाती
मैं दुनियॉ को खिलाती हूँ और मेरे बच्चे देखते हैं
जब मैं उनके द्वारा जहर दे कर लिटा दी जाती हूँ

क्योंकि बच्चों के कान धरती के गीत को सुनने के आदी नहीं थे इसलिये उसने क्या गाया वे उसकी तरफ कोई ध्यान ही नहीं देते।

केवल कभी कभी जब वह शाम को गाती, वह भी कभी कभी, तो उसको सुन कर उन बच्चों के दिल जो कभी बहुत नम्र और एक दूसरे के लिये दया से भरे हुए हुआ करते थे भारी हो जाते।

जैसे जैसे बच्चे और दूर तक बिखरते चले गये वे और और और ज़्यादा जगह मॉगते गये। वे रोज सुबह उठ कर पेड़ों के ऊपर लड़ते। वे चमकते हुए पत्थरों पर लड़ते। वे जमीन के छोटे छोटे टुकड़ों पर लड़ते।

"यह पेड़ मेरा है।", "नहीं, यह पेड़ मेरा है।" हर जगह यही सुनायी पड़ता है "मेरा मेरा मेरा।"

उन्होंने जंगलों से चिड़ियॉ इकट्ठी करके पिंजरों में बन्द कर ली हैं जहॉ उनके लिये उड़ने की जगह ही नहीं है। उन्होंने समुद्र से मछलियॉ निकाल कर डिब्बों में बन्द कर ली हैं जहॉ उनको तैरने की जगह नहीं है।

वे लोग जानवरों को केवल अपने आनन्द के लिये मार देते हैं और उनके सिर और खाल इकट्ठा कर लेते हैं। कभी कभी वे जंगलों से भी जानवरों को पकड़ लाते हैं और उनको कैद कर लेते हैं। वे पेड़ काट कर जंगलों को नंगा कर देते हैं।

सो जब धरती थक गयी और "सब बच्चों की मॉ" बूढ़ी हो गयी, तो वह बीमार हो गयी और मर गयी। बच्चों को यह पता ही नहीं था कि उनको किसी की परवाह करनी थी।

उसके मरने के बाद उसकी दूसरी इच्छा पूरी की गयी – कि उसकी देह को काले कपड़े पहना कर जितना भी उससे हो सकता था उसके बच्चों की सेवा करने दिया जाये।

इस तरह मरने के बाद भी वह काम करती रही हर दिन और हर रात, काले कपड़े पहन कर। बल्कि अब वह और ज़्यादा काम करती थी क्योंकि अब उसको सोने की भी ज़रूरत नहीं थी।

पर बच्चों ने अभी भी उसकी परवाह नहीं की। वे अभी भी उससे यही कहते रहे – हमको दो, हमको दो। और वह उनकी लगातार सेवा करती रही।

क्योंकि वह तो अब भूत[36] थी इसलिये उसने कुछ नहीं कहा। अब वह केवल रात को और सुबह पौ फटे[37] गाती थी क्योंकि हवा ने उन गीतों को केवल घाटियों में और पहाड़ों में ही पाया जहॉ वह तभी भी गूॅजते रहते थे।

मॉ ने अपनी एक बच्ची की खास परवाह की थी जो बहुत पहले पैदा हुई थी पर जो बात नहीं कर सकती थी। उस बच्ची की

[36] Ghost

[37] At the daybreak

ऑखें बहुत सुन्दर थीं और उसके काले बाल चोटी बन कर उसके सिर के पीछे लटके हुए थे। वह बच्ची बहुत ताकतवर भी थी।

जैसे जैसे उसके बाल बढ़ते गये उसका दिल भी बड़ा होता गया और उसके हाथ पॉव भी मजबूत होते गये और वह एक सुन्दर स्त्री बन गयी।

एक दिन जब वह अपना काम कर रही थी कि वह अचानक रुक गयी और उसने ऊपर मॉ की तरफ देखा। उस समय वह पहली बार बोली — "मॉ मैं तुम्हारी सहायता करूँगी। तुम बैठ जाओ और आराम करो।"

उसकी आवाज में बहुत दया भरी हुई थी और उसके यह कहने के बाद एक शान्ति सी फैल गयी। दया ने तो यह ग्रह बहुत दिन पहले ही छोड़ दिया था और अब तो यह भी लगने लगा कि सब कुछ रुक सा गया है, हालॉकि केवल एक पल के लिये ही।

मॉ ने एक उसॉस भरी और बोली — "धन्यवाद मेरी बच्ची।"

केवल इस एक दया भरे काम से मॉ आज़ाद हो गयी। वह जमीन पर एक ढेर के रूप में गिर पड़ी और धूल में बदल गयी।

तभी वहॉ एक बहुत बड़ी हवा आयी और उसको उड़ा कर आसमान की तरफ फेंक दिया जहॉ वह चॉद बन गयी जिसको हम आज वहॉ आते जाते देखते हैं।

उसकी तीसरी इच्छा थी कि एक बहुत ही कोमल सी रोशनी उस के ऊपर चमके ताकि वह अपने बच्चों और हरे नीले ग्रह को साल के हर महीने देख सके। वह भी पूरी की गयी।

और आज तक चॉद हर महीने अपने बच्चों को लड़ते झगड़ते देखती है। वह अपनी बेटियों को देखती है कि वे सबकी सेवा कर रही हैं जैसे पहले वह खुद करती थी।

पर चॉद की बेटियों के बच्चे अभी भी लड़ते हैं और अभी भी शिकायत करते हैं।

यह सब देख कर चॉद को अपना चेहरा छिपाना पड़ता है और रोना पड़ता है और इससे पहले कि वह यह सब देख सके वह एक बहुत ही पतले हॅसिये के रूप में दिखायी देती है। उसके बाद वह धीरे धीरे बाहर आती है और आखिर में अपना प्यार से भरा हुआ पूरा चेहरा दिखाती है।

ऐसी ही रात को कुछ लोग उसका प्यार पा लेते हैं और उसे बॉट देते हैं। चॉद की बेटियॉ उनके बारे में गाना गाती हैं जो सेवा करते हैं और उनके लिये एक और इच्छा पूरी करने की इच्छा प्रगट करतीं हैं – कि बच्चे अपनी मॉ को एक बार फिर से प्यार करना सीख सकें।

5 बाज़ और बच्चा[38]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़ाम्बिया देश में कही सुनी जाती है। यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि ज़ाम्बिया में एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसके एक बहुत छोटा बेटा था।

उस स्त्री को रोज ही खेतों पर काम करने के लिये जाना पड़ता था। पर उसकी यह समझ में नहीं आता था कि जब वह काम पर जाये तो वह अपने बच्चे को कहॉ छोड़ कर जाये सो वह हमेशा ही उसको अपने साथ ले कर जाती थी।

वह उसको एक पेड़ के नीचे लिटा देती वहीं उसको दूध पिलाती फिर अपना हल ले कर अपने खेत जोतती।

एक दिन उसने बच्चे को ठीक से दूध पिला दिया था ताकि वह कुछ देर के लिये शान्त रहे और फिर एक बहुत ही सुन्दर केले का पेड़ देख कर उसकी छॉह में उसको आराम से लिटा दिया पर जैसे ही वह उसको लिटा कर वहॉ से अपना काम करने गयी तो वह बच्चा रोने लगा और चुप ही नहीं हो रहा था।

स्त्री ने उसको चुप करने की बहुत कोशिश की पर उसके चुप होने के कुछ देर बाद ही जैसे ही वह उसको छोड़ कर वहॉ से गयी तो उसने फिर ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

[38] Hawk and the Child – a folktale from Baila (Ila) Tribe, Zambia, Southern Africa. Adapted from the book “African Folktales” by A Ceni. English Edition in 1998.

उसी समय एक मादा बाज़[39] वहॉ ऊपर से उड़ कर नीचे आयी और बच्चे के पास आ कर बैठ गयी। उसने बच्चे को तब तक अपने पंखों से सहलाया और अपनी चोंच से गुदगुदी की जब तक वह बच्चा मुस्कुराया नहीं।

फिर उसने देखा कि बच्चे की मॉ अपना हल लिये उसी की तरफ आ रही है। उसने सोचा कि वह उसको मारने के लिये चली आ रही है तो वह वहॉ से उड़ गयी। मॉ ने बच्चे को उठाया और गॉव वापस चली गयी।

उसने अपने पति से इस असाधारण घटना के बारे में इस डर से कुछ नहीं कहा कि वह उसकी इस बात का विश्वास ही नहीं करेगा। रोज की तरह से उसने अपना शाम का खाना बनाया, बच्चे को दूध पिलाया और सोने चली गयी।

अगली सुबह रोज की तरह वह फिर अपने बच्चे को ले कर खेतों पर अपना काम करने चली गयी। उसने फिर अपने बच्चे को एक पेड़ की छॉह में लिटाया, दूध पिलाया और अपना हल ले कर अपने काम पर चली गयी।

पर कुछ देर बाद बच्चे ने फिर से रोना चिल्लाना शुरू कर दिया। पर देखो तो कि वही मादा बाज़ फिर से वहॉ आ गयी।

[39] Translated for the word “Hawk” – see its picture above.

उसने फिर से बच्चे को अपने पंखों से सहलाया और चोंच से गुदगुदाया जब तक वह चुप नहीं हो गया।

इस बार वह स्त्री डर कम रही थी और उसको आश्चर्य ज़्यादा हो रहा था। उसके मुँह से निकला — "कितने आश्चर्य की बात है कि यह मादा बाज़ मेरे बच्चे को कोई नुकसान पहुँचाने की बजाय उसको चुप करा रही है और बच्चा भी चुप हो गया।"

उस स्त्री ने अपने बच्चे को उठाया और तुरन्त ही अपने गॉव वापस चली गयी। जैसे ही उसके पति ने उसको जल्दी जल्दी समय से पहले आते देखा तो उससे पूछा कि क्या हुआ वह आज जल्दी क्यों आ गयी थी।

अब की बार उस स्त्री ने अपने पति को बताया — "आज एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना घटी।"

पति बोला — "यहॉ तो कभी ऐसी कोई असाधारण घटना होती नहीं। अब की बार यह चमत्कार कैसे हुआ?"

स्त्री बोली — "कल भी और आज भी जब मैं खेत जोत रही थी एक मादा बाज़ उड़ कर नीचे आयी।"

पति ने बीच में ही बात काटी "तो क्या हुआ। बाज़ देखना तो कोई ऐसी असाधारण घटना नहीं है।"

"अरे आगे तो सुनो, बात यहीं तक नहीं है। बात यह है कि हमारा बच्चा रोये जा रहा था रोये जा रहा था। चुप ही नहीं हो रहा था।

मैं उसको देखने जाने वाली ही थी कि वह क्यों रो रहा है कि कहीं से खुले नीले आसमान में से एक मादा बाज़ नीचे आयी और आ कर उसके पास बैठ गयी।

उसने उसको अपने पंखों से सहलाया और अपनी चोंच से उसे गुदगुदाया और बच्चा जल्दी ही चुप हो गया।"

पति थोड़ी ज़ोर से बोला — "यह तुम क्या बेकार की बातें कह रही हो? जहॉ तक किसी को भी याद पड़ता है ऐसा पहले कभी हुआ है क्या? तुम ऐसी कहानियॉ अपने पास ही रखो।" यह सुन कर स्त्री ने अपना सिर झुका लिया और फिर कुछ नहीं कहा।

उसने अपने बच्चे को उठाया, हल को अपने कन्धे पर रखा और फिर से काम पर चली गयी।

उसने फिर से अपने बेटे को एक पेड़ की छॉह में लिटाया, दूध पिलाया और हल ले कर खेत जोतने चली गयी। बच्चे ने फिर से रोना शुरू कर दिया।

स्त्री ने सोचा मैं अभी अभी घर जाती हूॅ और अपने पति को बुला कर यह सब दिखाती हूॅ। उसने तुरन्त ही बच्चे को उठाया और तुरन्त ही गॉव भागी भागी गयी।

जब वह घर पहुॅची तो उसने अपने पति को झोंपड़ी के बाहर अपने तीर तेज़ करते हुए बैठे देखा तो उसने उससे चिल्ला कर कहा — "आओ जल्दी आओ और आ कर देखो कि मैंने तुमसे सच कहा था या झूठ।"

पति को बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने तुरन्त ही अपना तीर कमान उठाया और अपनी पत्नी के पीछे पीछे चल दिया। जैसे ही वे खेत के पास पहुँचे स्त्री ने कहा — "उन झाड़ियों के पीछे छिप जाओ और देखो हिलना नहीं। मैं बच्चे को यहाँ इस पेड़ की छाँह में लिटाती हूँ।"

जैसे ही बच्चे की माँ उसको वहाँ अकेला छोड़ कर गयी बच्चे ने फिर से रोना शुरू कर दिया। कुछ पल में ही वह मादा बाज़ वहाँ आ गयी और आ कर उसने उसको अपने पंखों से सहलाना शुरू कर दिया और चोंच से गुदगुदाना शुरू कर दिया।

यह देख कर बच्चे का पिता तो बहुत ही डर गया। उसने अपनी कमान खींच ली, निशाना साधा और तीर छोड़ दिया। पर इत्तफाक से उसी पल वह मादा बाज़ एक तरफ को हट गयी और जो तीर उस बाज़ को मारने के लिये चलाया गया था वह बच्चे को लग गया।

बड़े लोगों का कहना है कि इस तरह से दुनियाँ का यह पहला खून था।

मादा बाज़ यह कहते हुए ऊपर उड़ गयी — "ओ आदमी, तुम और तुम्हारे जैसे और जो भी आदमी इस समय इस दुनियाँ में हैं और जो आने वाले हैं वे भी, जैसे मैं तुम्हारे बच्चे को तसल्ली देने आयी फिर भी तुमने मुझे मारने की कोशिश की मेरी बद्दुआ तुमको भी लगेगी।

तुमने अपने ही बच्चे को मारा है तुमको भी तुम्हारा अपना ही कोई आदमी मारेगा और इस तरह वे सब आपस में एक दूसरे को मारते रहेंगे।" और बदकिस्मती से उसकी वह बद्दुआ अभी तक चल रही है।

6 एक सुन्दर नौजवान साकूनाका[40]

यह लोक कथा दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक विधवा अपने एक बहुत सुन्दर बेटे के साथ रहती थी। उसके बेटे का नाम था साकूनाका मुगवई[41]।

उसकी मॉ यह नहीं चाहती थी कि वह कभी शादी करे क्योंकि उसको डर था कि शादी के बाद वह अपनी पत्नी के पीछे पीछे चला जायेगा और फिर उसको वह अकेला छोड़ जायेगा।

सो जब वह बड़ा हो गया तो उसने उससे यह वायदा ले लिया कि वह कभी किसी ऐसी लड़की से शादी नहीं करेगा जिसने उसकी मॉ के हाथ का पकाया खाना खाया हो।

उसकी मॉ खाना बहुत अच्छा बनाती थी और सारे लोग उसके हाथ का बना खाना खाना पसन्द करते थे।

बहुत जल्दी ही इस नौजवान की तारीफें सारे देश में फैल गयीं और बहुत सारी जवान लडकियॉ उससे अपनी शादी के लिये मिलने के लिये और उसकी सुन्दरता देखने के लिये उसके पास आने लगीं।

---

[40] Sakunaka, The Handsome Young Man (Story No 28) – a Shona folktale from Zimbabwe, Southern Africa, Africa. Adapted from the book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela. Told by Hugh Tracey

[41] Sakunaka Mugwai – an African male name

जब वे साकूनाका को देखने आतीं तो उसकी मॉ उन लड़कियों को प्रेम से अन्दर बुलाती और बिठाती और उनसे कहती — "लड़कियों तुम लोग भूखी होगी। मैं तुम लोगों के खाने के लिये थोड़ा दलिया ले कर आती हूँ।"

वे जवाब देतीं — "धन्यवाद मॉ।" और जब वह उनके लिये दलिया बना कर लाती तो वे उसको गॉव के बाहर पेड़ के नीचे बैठ कर खा लेतीं।

फिर साकूनाका की मॉ अपने बेटे की झोंपड़ी की तरफ जाती और उसके बाहर खड़े हो कर यह गाना गाती ...

साकूनाका मेरे बेटे, कुछ लड़कियॉ तुमसे मिलने आयीं हैं
मॉ तुमने क्या पकाया है? दलिया मेरे बेटे मुगवई
क्या उन्होंने कुछ खाया? हॉ हॉ मेरे बेटे, तो उनको वापस भेज दो

और साकूनाका की मॉ उन सबको वापस भेज देती। इस तरह लड़कियों के कई झुंड इस सुन्दर नौजवान साकूनाका से मिलने के लिये गॉव आये पर सब वापस भेज दिये गये।

हर बार साकूनाका की मॉ उनको कुछ न कुछ खाने को देती और वे उसको खा लेतीं। हर बार साकूनाका की मॉ अपना गाना गाती और हर बार सकूनाका उन लड़कियों को वापस भेज देता।

एक बार 10 लड़कियों के एक झुंड ने यह देखा कि कोई भी जो वहॉ उसकी मॉ के हाथ का बना खाना खाता वह वहॉ से बिना साकूनाका से मिले ही वापस भेज दिया जाता।

सो उन्होंने इसके लिये एक तरकीब सोची कि वे अपने घर से अपना खाना ले जायेंगी और उसे गॉव के पास एक झाड़ी में छिपा देंगी फिर बाद में एक साथ मिल कर खा लेंगी।

उन्होंने ऐसा ही किया। जब वे गॉव के पास आयीं तो उन्होंने अपना लाया खाना एक झाड़ी में छिपा दिया और फिर वे साकूनाका के घर आयीं।

हर बार की तरह साकूनाका की मॉ ने उनको प्रेम से अन्दर बुलाया और कहा — "लड़कियों तुम लोग भूखी होगी। मैं तुम लोगों के खाने के लिये थोड़ा दलिया ले कर आती हूँ।"

सब लड़कियॉ एक साथ बोलीं — "धन्यवाद मॉ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

मॉ बोली — "तो तुम लोग थकी हुई होगी तुम सो जाओ।" कह कर उसने उनको एक झोंपड़ी दिखायी जहॉ वे रात बिता सकतीं थीं। साकूनाका की मॉ को पूरा विश्वास था कि जब वे सुबह उठेंगी तो वे सब जरूर ही भूखी होंगी।

पर रात में वे लड़कियॉ उठीं, अपनी झोंपड़ी से बाहर निकलीं और उस झाड़ी के पास गयीं थीं जहॉ उन्होंने अपना खाना छिपा रखा था। वहॉ उन सबने मिल कर अपना खाना खाया और अपनी झोंपड़ी में वापस लौट कर आ कर सो गयीं।

सुबह सवेरे ही साकूनाका की मॉ उनकी झोंपड़ी की तरफ गयी और बोली — "लड़कियों अब तो तुमको भूख लग आयी होगी।

आओ अब कुछ खालो। यह लो मैं तुम्हारे लिये कुछ दलिया बना कर लायी हूँ, इसे खा लो।"

लड़कियों ने फिर कहा — "धन्यवाद मॉ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

मॉ ने सोचा अब मैं क्या करूँ। ये लड़कियॉ तो मेरे हाथ का बना खाना ही नहीं खाना चाहतीं।

उसने उन सबको किसी तरह गॉव के बाहर एक पेड़ की छाया में अगले दिन सारे दिन बैठने के लिये मजबूर कर दिया और अगले दिन वे फिर उसी झोंपड़ी में सोयीं।

उस रात को भी वे अपनी उसी झाड़ी में गयीं और अपना खाना खा कर फिर अपनी झोंपड़ी में वापस आ कर सो गयीं।

अगले दिन सुबह सवेरे ही साकूनाका की मॉ उनकी झोंपड़ी की तरफ गयी और बोली — "लड़कियों अब तो तुमको भूख लग आयी होगी। दो दिन हो गये तुम लोगों को खाना खाये। यह लो मैं तुम्हारे लिये कुछ दलिया बना कर लायी हूँ, इसे खालो।"

लड़कियों ने फिर कहा — "धन्यवाद मॉ जी, हम लोगों को भूख नहीं है।"

साकूनाका की मॉ ने सोचा अब मैं क्या करूँ। वह एक बार फिर साकूनाका की झोंपड़ी को पास गयी और वहॉ जा कर उसने फिर एक गाना गाया ...

साकूनाका मेरे बेटे, कुछ लड़कियॉ तुमसे मिलने आयी हैं
मॉ तुमने क्या पकाया है? दलिया मेरे बेटे मुगवई
क्या उन्होंने कुछ खाया? नहीं नहीं मेरे बेटे
तो उनको यहॉ अन्दर भेज दो

पर यह गाना गा कर वह रो पड़ी — "ओह मेरे बेटे, अब मेरे दिन खत्म हो गये। अब मुझे यहॉ से चले जाना चाहिये और मर जाना चाहिये।"

साकूनाका बोला — "यही करो मॉ, अगर तुम यही चाहती हो तो।"

सो साकूनाका की मॉ ने अपनी सब चीज़ें एक टोकरी में रखीं और दूर जंगल में एक झोंपड़ी में रहने चली गयी और वहीं मर गयी।

उसके बाद साकूनाका ने उन लड़कियों को अपने गॉव बुलाया और उनमें से सबसे बड़ी लड़की के साथ शादी कर ली और सुख से रहने लगा।

7 जादुई खीरे[42]

यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार ज़िम्बाब्वे देश के एक गॉव में एक नौजवान रहता था। उसका नाम वॉगे[43] था। हालॉकि उस गॉव में बहुत सारी लड़कियॉ थीं पर फिर भी वह अभी तक कुँआरा ही था क्योंकि उन लड़कियों का कहना था कि वह बहुत ही पतला दुबला और बदसूरत था।

उसकी उमर के दूसरे नौजवानों की शादियॉ हो चुकी थीं और वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार किसी किसी के तो एक से ज़्यादा भी पत्नियॉ थीं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि वॉगे यह सब देख देख कर और सोच सोच कर ही दिन पर दिन दुबला हुआ जा रहा था। वह देखने में तो सुन्दर नहीं था परन्तु वह दयालु बहुत था।

एक दिन उस गॉव के लोगों ने कुश्ती का प्रोग्राम रखा। सुबह सवेरे ही गॉव के सारे लोग मैदान में इकट्ठा हो गये। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर तक उन सबमें खूब कुश्ती हुई। दोपहर को जब

[42] Magical Cucumbers – a folktale of Zimbabwe, Southern Africa.
[43] Wange – name of the man who was not married

काफी गरम हो गया सो सभी लोग कुश्ती रोक कर पेड़ों की छाया में लेट गये।

एक आदमी ने ढोल बजाना शुरू किया तो उनकी पत्नियों को पता चल गया कि उनके पतियों के दोपहर के खाने का समय हो गया है सो वे सब अपने अपने पतियों के लिये दोपहर का खाना लेकर कुश्ती के मैदान को चलीं।

सभी ने अपनी अपनी पत्नियों के हाथ का स्वाददार खाना पेट भर कर खाया परन्तु वॉग की तो कोई पत्नी ही नहीं थी इसलिये न तो उसके लिये कोई खाना ही ले कर आया और न ही वहॉ उसको किसी ने खाना खाने के लिये पूछा।

वॉगे बेचारा भूख से परेशान था। उसने सोचा — "काश, मेरी भी कोई पत्नी होती तो वह भी मेरे लिये खाना लाती। अब तो मुझे अपने आप ही अपना खाना ढूँढना पड़ेगा। चलूँ, पास की नदी से ही कोई मछली पकड़ता हूँ।"

ऐसा सोच कर वह पास की नदी की तरफ चल दिया।

उसने अपना मछली पकड़ने वाला कॉटा नदी में फेंका। कॉटा खींचने पर भारी लगा तो उसने सोचा कि "लगता है आज कोई बड़ी मछली फॅसी है क्योंकि मेरा कॉटा खूब भारी हो गया है। आज तो मजा आ गया।"

यह सोच कर उसने जैसे ही वह कॉटा ज़ोर लगा कर ऊपर खींचा तो उस कॉटे की रस्सी टूट गयी और वह कॉटा नदी में डूब गया।

वह दुखी हो कर बोला — "अरे, यह तो रस्सी भी टूट गयी, मेरा कॉटा भी गया। मैं मछली भी नहीं पकड़ सका और में भूखा भी रह गया। मैं इस बड़ी मछली को किसी भी हाल में अपने हाथ से जाने नहीं दूँगा।" और वह तुरन्त ही नदी में कूद गया।

पर चारों ओर देखने पर भी उसको नदी में मछली तो कोई दिखायी नहीं दी, हॉ, एक बहुत बड़ा मगर जरूर दिखायी दे गया।

वॉगे ने उससे पूछा — "क्या तुमने मेरा कॉटा चुराया है?"

मगर ने जवाब दिया — "नहीं, इन सब खेलों के लिये तो मैं अब काफी बूढ़ा हो चुका हूँ लेकिन मैंने तुम्हारा कॉटा चुराने वाले को उस रास्ते पर जाते हुए जरूर देखा है। अगर तुम जल्दी से उधर चले जाओ तो शायद उसे पकड़ पाओ।" यह कह कर उसने पानी में जाते एक रास्ते की तरफ इशारा कर दिया।

जिस तरफ मगर ने इशारा किया था वॉगे ने उस तरफ देखा तो उसे पानी में जाता एक पथरीला रास्ता दिखायी दिया जिसके दोनों तरफ घास लगी हुई थी। उसने मगर को धन्यवाद दिया और उस रास्ते पर चल दिया।

सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह रास्ता पानी के अन्दर था और उसको पानी के अन्दर सॉस लेने में कोई मुश्किल नहीं हो रही थी।

वह उस रास्ते पर ऐसे बढ़ता चला जा रहा था जैसे धरती पर चल रहा हो। रास्ते में उसने सुनहरी रुपहली मछलियॉ देखीं, पानी के सॉप देखे और हरे केकड़े भी देखे।

चलते चलते अचानक ही वह काले सफेद पत्थरों से बने एक घर के सामने जा पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसने आवाज लगायी — "नमस्ते, अन्दर कोई है?"

मकान के अन्दर से आवाज आयी "नमस्ते" और कुछ ही पल में झुकी हुई कमर वाली एक बुढ़िया बाहर आयी।

वॉगे ने बुढ़िया से पूछा — "यहॉ किसी ने मेरा कॉटा चुरा लिया है क्या आप बता सकती हैं कि मेरा कॉटा किसने चुराया है?"

बुढ़िया ने पूछा — "पर तुम यहॉ इस पानी के राज्य में क्या कर रहे हो, ओ आदमी के बच्चे?"

वॉगे बोला — "मैं नदी पर मछलियॉ पकड़ रहा था कि मेरा कॉटा खो गया। मैं उसे ढूॅढते ढूॅढते यहॉ तक आ गया।"

बुढ़िया बोली — "क्या? तुम एक छोटे से कॉटे के लिये इतनी तकलीफ उठा रहे हो? बड़े गरीब लगते हो।"

वॉगे बोला — "जी हॉ यही मेरे खाने पीने का सहारा है इसलिये मैं इसे खोना नहीं चाहता।"

बुढ़िया के मुँह से निकला "ओह" और पास से उसने एक स्पंज तोड़ लिया और वॉगे से कहा — "यह स्पंज लो और ज़रा मेरी पीठ तो साफ कर दो।"

हालॉकि वॉगे इस समय बुढ़िया की पीठ साफ करने के बिल्कुल भी मूड में नहीं था परन्तु क्योंकि स्वभाव से ही वह बहुत दयालु था इसलिये वह उस स्पंज से बुढ़िया की पीठ साफ करने लगा।

थोड़ी देर बाद वह बुढ़िया से बोला — "यह लीजिये, आपकी पीठ साफ हो गयी। अब यह चॉद की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "नहीं, अभी नहीं, थोड़ा और साफ करो।"

तो वॉगे ने फिर से उसकी पीठ साफ करनी शुरू कर दी। थोड़ी देर बाद वह फिर बोला — "यह लीजिये, अब शायद आपकी पीठ साफ हो गयी है क्योंकि अब यह सूरज की तरह चमक रही है।"

बुढ़िया ने कहा — "धन्यवाद बेटा, मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। अब तुम मुझसे जो चाहे मॉग लो। बोलो तुम्हें क्या चाहिये?"

वॉगे अपना कॉटा खोने का दुख तो भूल गया और खुशी से भर कर बोला — "मुझे एक सुन्दर सी पत्नी चाहिये। क्या आप मुझे वह दे सकेंगी?"

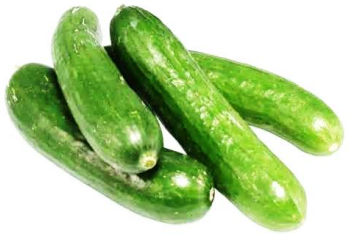

बुढ़िया बोली — "जरूर जरूर, क्यों नहीं।" कह कर वह घर के अन्दर गयी और चार सुन्दर चिकने खीरे ले आयी।

उन खीरों को वॉगे को देते हुए वह बोली — "लो ये खीरे लो और घर वापस चले जाओ। जब तुम नदी के किनारे पहुँचोगे तब इनको तोड़ना। हर खीरे में से एक एक सुन्दर लड़की निकलेगी।

लेकिन याद रखना कि इन खीरों को नदी के किनारे ही तोड़ना, उससे पहले नहीं, क्योंकि ये लड़कियॉ तुरन्त ही पीने के लिये पानी मॉगेंगी और अगर तुमने इनको तुरन्त ही पानी न दिया तो ये सब गायब हो जायेंगी और फिर कभी नहीं आयेंगी।"

वॉगे को हालॉकि बुढ़िया की इन बातों पर जरा भी विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी सिर झुका कर उसने "अच्छा जी" कहा और वे खीरे उससे ले कर अपनी जेब में रख लिये।

फिर बोला — "धन्यवाद, मेरे ऊपर यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे इतनी सुन्दर भेंट दी। जैसा आपने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।"

ऐसा कह कर वह वहॉ से अपने घर की तरफ चल दिया। रास्ते में उसने सोचा — "अब मैं कभी अपना कॉटा वापस नहीं पा सकूँगा इसलिये जब मैं धरती पर पहुँच जाऊँगा तब इन खीरों को खा लूँगा।"

धरती पर पहुँच कर उसने देखा कि वह बूढ़ा मगर अभी भी वहीं लेटा हुआ है। वॉगे ने उसको नमस्ते की और ऊपर चल दिया।

ऊपर अभी भी बहुत गरम था इसलिये वह नदी से कुछ दूर पर लगे एक पेड़ की छाया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने अपनी जेब से चारों खीरे निकाले और उनको अपने हाथों में उलटने पलटने लगा। वे उसे बहुत ही रसीले और ताजे दिखायी दे रहे थे।

उसे बहुत तेज़ भूख लगी थी सो वह उन खीरों को खाना चाहता था। उसने खीरा खाने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि उसे बुढ़िया के शब्द याद आये कि इन खीरों को नदी के पास ही तोड़ना।

उसने तय किया कि वह पहले बुढ़िया के कहे अनुसार ही करेगा। अगर वे जादू के खीरे हुए तो उनमें से लड़कियॉ जरूर निकलेंगी सो उसने ऐसा ही किया। पर वह यह अन्दाज नहीं लगा सका कि उसको वे खीरे पानी के कितने पास तोड़ने चाहिये।

उसने पहले एक खीरा तोड़ा। तुरन्त ही उसमें से एक सुन्दर लड़की निकल कर उसके सामने खड़ी हो गयी और बोली "पानी दो"। वॉगे तो उसको देख कर आश्चर्यचकित सा बैठा ही रह गया, न हिल सका न डुल सका।

उस लड़की ने फिर कहा "मुझे पानी चाहिये।" अब वह जैसे सपने से जगा और उसे ख्याल आया कि उसे तो ये खीरे नदी के

किनारे तोड़ने चाहिये थे। वह तुरन्त ही नदी से पानी लेने भागा और पानी ले कर उलटे पैरों वापस आया पर उसे देर हो गयी थी और वह लड़की गायब हो चुकी थी।

सो बुढ़िया की बात तो सच निकली। वह पछताने लगा कि अपनी बेवकूफी से उसने अपनी इतनी सुन्दर पत्नी खो दी।

अब वह बाकी बचे हुए खीरे नदी के किनारे ले आया और उसने पानी भी अपने पास रख लिया।

उसने फिर दूसरा खीरा तोड़ा। उसमें से भी एक सुन्दर सी लड़की निकली और बोली "पानी"। वॉगे ने कॉपते हाथों से उसे पानी पिलाया। अब की बार वह लड़की गायब नहीं हुई बल्कि उसको देख कर मुस्कुरा दी।

इसी तरह उसने बाकी बचे दो खीरे भी तोड़े और उनमें से भी दो सुन्दर लड़कियॉ निकलीं। उसने उनको भी तुरन्त ही पानी पिलाया।

कुछ देर के लिये तो वह हक्का बक्का रह गया, उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। फिर जब वह होश में आया तो उन तीनों लड़कियों से बोला — "चलो घर चलते हैं। जब वह घर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वह जल्दी से अपनी तीनों पत्नियों को ले कर घर के अन्दर घुस गया ताकि उन्हें कोई देख न ले।

अगली सुबह फिर कुश्ती हुई। वॉगे भी उनके साथ था। दोपहर को जब खाने का समय हुआ तो सभी लोगों की पत्नियॉ अपने अपने पतियों के लिये खाना ले कर आयीं।

पहले दिन की तरह से उस दिन भी किसी ने भी वॉगे को खाना नहीं दिया सो वह उनसे कुछ दूर हट कर बैठ गया।

अचानक उसने सरसराहट और फुसफुसाहट की आवाजें सुनी। उसके सभी साथी फुसफुसा रहे थे। तभी उसकी नजर सामने पड़ी तो उसने देखा कि उसकी तीनों पत्नियॉ कुछ न कुछ अपने सिर पर रखे चली आ रही थीं।

उसकी पहली पत्नी ने उसके आगे दलिये का बरतन रखा, दूसरी ने मॉस का और तीसरी ने पीने के साफ पानी का। वॉगे ने बड़े प्रेम से खाना खाना शुरू कर दिया।

वहॉ बैठे सभी लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कल तक तो यह अकेला था और आज इसके लिये इसकी तीन तीन पत्नियॉ खाना ले कर आयी हैं। यह मामला क्या है?

वे तुरन्त ही दौड़े दौड़े वॉगे के पास पहुँचे और उससे सवाल पर सवाल करने शुरू कर दिये — "तुमको ये पत्नियॉ कहॉ से मिलीं?" "तुम कोई सरदार हो जो तुम तीन तीन पत्नियॉ रखे हो?"

"हमने इतनी सुन्दर लड़कियॉ तो पहले कभी नहीं देखीं।" "हमारी पत्नियॉ तो इनके आगे बहुत ही बदसूरत और भद्दी दिखायी देती हें।" आदि आदि वाक्य वॉगे के कानों में पड़ने लगे।

वॉगे ने जवाब दिया — "आप लोग शान्ति से बैठें तो मैं आपको सब कुछ बताता हूँ।" कह कर उसने कॉटा खोने से ले कर पत्नियॉ मिलने तक की पूरी कहानी उन सबको बता दी।

उसकी कहानी सुनते ही वे सब भी विचार करने लगे कि किस तरह पानी में जा कर वैसी सुन्दर लड़कियों को लाया जाये।

तुरन्त ही वे सब घर गये और अपनी अपनी पत्नियों को कह आये कि तुम सभी बड़ी बदसूरत हो इसलिये तुम अपने अपने पिता के घर जाओ अब हम तुम्हें नहीं रखेंगें। पत्नियॉ बेचारी रोती हुई अपने अपने पिता के घर चली गयीं।

उधर वे सब लोग नदी के किनारे आ गये जहॉ वॉगे ने अपना मछली का कॉटा खोया था। उन्होंने भी अपने अपने कॉटे पानी में फेंके और इस बात का इन्तजार किये बिना ही कि कोई मछली उसमें फॅसी कि नहीं वे नदी में कूद गये।

वह बूढ़ा मगर आश्चर्यचकित सा अभी भी वहीं लेटा हुआ था। वे सभी उसको ऐसे ही छोड़ कर घर को जाने वाले पथरीले रास्ते की तरफ बढ़ गये।

वे लोग इतनी जल्दी में थे कि न तो वे मछलियों की सुन्दरता ही देख सके और न ही हरे केकड़ों पर नजर डाल सके। आखिर वे उस पथरीले रास्ते पर चलते हुए उसी काले सफेद पत्थरों के बने हुए घर के सामने आ खड़े हुए जहॉ वॉगे पहुँचा था।

किसी को वहॉ न देख कर उन्होंने चिल्लाना शुरू किया — "ओ बुढ़िया, अरी ओ बुढ़िया, जल्दी से बाहर निकल और हम सबको सुन्दर सुन्दर पत्नियॉ दे वरना हम सभी मिल कर तुझे पीटेंगे।"

बेचारी बुढ़िया कॉपती सी घर के बाहर आयी और पहले की तरह एक स्पंज तोड़ा और उसे उन लोगों की तरफ ले जा कर बोली — "मेरी पीठ बड़ी गन्दी हो रही है पहले ज़रा मेरी पीठ साफ कर दो।"

पर वे सभी इस बात पर ज़ोर से हॅस कर बोले — "यह हमारा काम नहीं है। हम तेरी पीठ साफ क्यों करेंगे? हमको तो बस तू जल्दी से वे जादू के खीरे दे दे जिनको तोड़ने पर सुन्दर सुन्दर लड़कियॉ निकल आती हैं नहीं तो हम तेरे टुकड़े टुकड़े कर देंगे।"

वह बुढ़िया बेचारी धीरे धीरे घर के अन्दर गयी और दो टोकरी में बहुत सारे खुरदरे खीरे ले आयी। सभी लोगों ने टोकरी की टोकरी छीननी शुरू कर दी परन्तु बुढ़िया ने सबको केवल सात सात खीरे ही दिये।

उन लोगों ने सोचा कि हम तो वॉगे से बहुत अच्छे हैं क्योंकि वॉगे को तो केवल तीन ही खीरे मिले थे पर हमको तो सात सात खीरे मिले हैं। हमारी किस्मत उससे ज़्यादा अच्छी है। वे दौड़ते भागते खीरे तोड़ने के चक्कर में तुरन्त ही नदी के किनारे जा पहुॅचे।

जल्दी जल्दी उन्होंने खीरे तोड़े। सबसे पहले आदमी ने जैसे ही अपना पहला खीरा तोड़ा वह डर गया क्योंकि उसके सामने एक उससे भी लम्बी और बदसूरत औरत खड़ी थी।

सभी के साथ ऐसा ही हुआ। इस उम्मीद में कि किसी खीरे में से तो कोई सुन्दर सी लड़की निकलेगी उन्होंने सारे खीरे तोड़ डाले।

पर उन खीरों में निकली हर औरत पहली औरत से कहीं ज़्यादा लम्बी और कहीं ज़्यादा बदसूरत होती गयी।

उनमें से सबसे लम्बी और सबसे ज़्यादा बदसूरत औरत ने कहा — "तुम हमको बदसूरत कहते हो?" और ऐसा कह कर उन्होंने सबने मिल कर उन सबको पीटना शुरू कर दिया।

दर्द से चिल्लाते हुए सभी आदमी गॉव की तरफ भागे और उन बदसूरत औरतों से बचने के लिये अपने घरों में छिप कर दरवाजा बन्द कर लिया। पर वे सब औरतें गॉव में आते ही गायब हो गयीं।

जब सब कुछ शान्त हो गया तब वे लोग अपने अपने घरों से बाहर निकले। अब उन्हें लगा कि वे कितने भूखे थे परन्तु वहॉ कोई भी औरत खाना बनाने के लिये नहीं थी क्योंकि अपनी सभी पत्नियों को तो उन्होंने उनके पिता के घर भेज दिया था।

कुछ लोगों ने अपनी पत्नियों को वापस लाने की कोशिश भी की पर बेकार। पत्नियों ने कहा — "तुम लोगों ने हमारे दिल को

ठेस पहुँचायी है इसलिये ऐसे बेरहम पतियों के पास हमें हमारे माता पिता भेजने को तैयार नहीं हैं।"

उधर वॉगे के पास अब तीन पत्नियॉ थीं और सब लोग उसको इज़्ज़त से देखने लगे थे। अच्छा खाना मिलने से अब वह सुन्दर भी हो गया था।

दूसरे लोगों को पत्नियों की खोज में फिर से दूर दूर जगह जाना पड़ा। फिर जब उनको पत्नियॉ मिल गयीं तो उन्होंने फिर कभी उनको बदसूरत नहीं कहा।

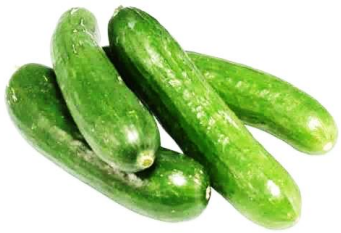

8 बिल्ली घर में कैसे आयी[44]

यह लोक कथा भी दक्षिणी अफ्रीका के ज़िम्बाब्वे देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत दिनों पुरानी बात है कि एक जंगली बिल्ली एक जंगल में अकेली रहती थी। कुछ समय बाद वह अकेले रहते रहते थक गयी तो उसने एक जंगली बिल्ले से शादी कर ली।

वह बिल्ला भी कोई ऐसा वैसा बिल्ला नहीं था बल्कि पूरे जंगल में बड़ा शानदार बिल्ला था। दोनों कुछ दिनों तक खुशी से साथ साथ रहे।

एक दिन वे दोनों घास में साथ साथ घूम रहे थे कि एक चीता[45] उन पर कूद पड़ा। इससे बिल्ला एक तरफ को लुढ़क गया और उसके बालों और पंजों पर धूल लग गयी।

बिल्ली बोली — "ओह मेरे पति के तो सारे शरीर पर धूल लग गयी है और अब वह जंगल के सबसे अच्छे जानवरों में से एक नहीं रहा। इससे अच्छा तो यह चीता है जिसने इस बिल्ले को गिरा

[44] The Cat Who Came Indoors (Story No 2) – a folktale from Zimbabwe, Southern Africa. Adapted from the Book : "Favorite African Folktales", edited by Nelson Mandela.

[45] Translated for the word "Leopard". See its picture above.

दिया।" सो वह बिल्ली बिल्ले को छोड़ कर उस चीते के साथ रहने चली गयी।

बहुत दिनों तक वे दोनों भी खुशी खुशी साथ साथ रहे। एक दिन वे दोनों जंगल में शिकार कर रहे थे कि एक झाड़ी में से एक शेर चीते की पीठ की तरफ कूदा और उसको मार कर उसे सारा का सारा खा गया।

बिल्ली को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा तो यह चीता तो जंगल का सबसे अच्छा जानवर नहीं था इसको तो यह शेर ही खा गया।

इसका मतलब यह है कि जंगल का सबसे अच्छा जानवर तो शेर है जो चीते को भी मार देता है। सो वह बिल्ली शेर के साथ रहने चली गयी।

वहॉ भी बिल्ली कुछ समय आराम से रही कि एक दिन जब वह शेर के साथ जंगल में टहल रही थी कि एक बहुत बड़ा जानवर आया और शेर के ऊपर उसने अपना पैर रख दिया और शेर मर गया।

"अरे, यह तो शेर भी जंगल का सबसे अच्छा जानवर नहीं निकला। सबसे अच्छा जानवर तो वह हाथी है जिसने शेर को भी मार डाला।" सो वह बिल्ली हाथी के साथ रहने चली गयी।

अब वह बिल्ली हाथी की पीठ पर चढ़ जाती और उसकी गरदन पर उसके दोनों कानों के बीच में बैठ कर कुछ कुछ बोलती

रहती। हाथी के साथ रहने में उसको बड़ा आनन्द आया। वह उसके साथ बहुत खुश थी।

वे दोनों भी काफी दिन तक खुशी खुशी रहे कि एक बार जब वे लम्बे लम्बे सरकंडे[46] के पेड़ों में से हो कर गुजर रहे थे तो एक बहुत ज़ोर की आवाज आयी और उस आवाज के साथ ही हाथी नीचे गिर पड़ा और मर गया।

बिल्ली ने चारों तरफ देखा तो उसको पास में बन्दूक लिये एक छोटा सा आदमी खड़ा हुआ दिखायी दिया। "ओओओह, अरे यह तो हाथी भी जंगल का सबसे बढ़िया जानवर नहीं था। यह तो यह आदमी है जो हाथी को भी मार देता है।"

और वह बिल्ली उस आदमी के पीछे पीछे उसके घर चली गयी और उसकी झोंपड़ी की फूस की छत पर जा कर बैठ गयी। वह खुशी खुशी बोली — "आखिर मैंने पूरे जंगल का सबसे अच्छा जानवर ढूँढ ही लिया। अब मैं इसके साथ आराम से अपनी सारी ज़िन्दगी गुजार सकूँगी।"

[46] Translated for the word "Reed", See its forest's picture above.

काफी दिन तक वह उस झोंपड़ी की फूस वाली छत पर खुशी खुशी रही और उस गॉव में जो भी चूहे उसे मिल जाते उन्हें पकड़ कर खा लेती।

एक दिन वह उस फूस की छत पर बैठी धूप का आनन्द ले रही थी कि उसने झोंपड़ी के अन्दर से कुछ शोर सुना। घर में पति और पत्नी दोनों आपस में बहुत ज़ोर ज़ोर से लड़ रहे थे।

दोनों की लड़ाई की आवाजें तेज़ और तेज़ होती जा रही थीं कि आदमी धड़ाम से उस झोंपड़ी के बाहर धूल में आ गिरा।

यह देख कर बिल्ली बोली "आहा, अब मुझे पता चला कि पूरे जंगल का सबसे अच्छा जानवर कौन है। वह यह आदमी भी नहीं था बल्कि यह औरत है जो आदमी को भी अपने काबू में रखती है।"

बस वह तुरन्त ही उस फूस की छत से नीचे उतर आयी और झोंपड़ी के अन्दर चली गयी। अन्दर जा कर वह आग के पास बैठ गयी और तब से अब तक वह वहीं बैठी है।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**1**
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–**2**
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
4 रैवन की लोक कथाऐं–**1**

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — **10** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — **45** लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–**1** — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1** — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2** — प्रभात प्रकाशन

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–**3**
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–**1**
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html
7 इटली की लोक कथाऐं–**2**
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html

8 इटली की लोक कथाऐं**–3**
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं**–4**
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं**–5**
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं**–6**
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं**–7**
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
12 इटली की लोक कथाऐं**–8**
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
13 इटली की लोक कथाऐं**–9**
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
14 इटली की लोक कथाऐं**–10**
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
15 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
16 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**